04 - आखिर सच तो सामने आना ही चाहिए!

05 -चैत्र नवरात्रि : शरीर और आत्मा की शुद्धि का पर्व

06 - झरने का पानी घरों तक पहुंचाकर लोग कमा रहे रोजी-रोटी...

07 - हम भाषाई गुलाम हैं...

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 1 अप्रैल, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 201, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

राणा सांगा विवाद में क्यों उलझी है बीजेपी, कांग्रेस और सपा ?

शंकर अर्निमेष

मराठा आइकन संभाजी महाराज के बाद, राजपूत आइकन राणा सांगा भी विवादों में आ गए हैं। यह तब हुआ जब समाजवादी पार्टी के दलित राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन ने 15वीं सदी के शासक को मुगल सम्राट बाबर के भारत में प्रवेश में मदद करने के लिए 'देशद्रोही' कहा। इस विवाद को और बढ़ाते हुए, करणी सेना ने अन्य राजपूत संगठनों के साथ मिलकर बुधवार को आगरा में सुमन के घर में तोड़फोड़ की। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता राजस्थान से लेकर उत्तर प्रदेश, गुजरात और मध्य प्रदेश तक में उनके पुतले जला रहे हैं और उनका विरोध कर रहे हैं। शुक्रवार को संसद में, भाजपा ने 'राष्ट्रीय नायक' का अपमान करने के लिए सुमन से बिना शर्त माफ़ी मांगने की मांग की। हालांकि, विपक्ष दलित नेता के बचाव में आया, उनके घर पर हमले को उजागर किया और दलित समुदाय के खिलाफ़ हिंसा के खिलाफ़ कड़ी आलोचना की।

21 मार्च को उच्च सदन में अपने संबोधन में सुमन ने कहा, 'बीजेपी नेता अक्सर दावा करते हैं कि मुसलमानों में बाबर का डीएनए है। हालांकि, भारतीय मुसलमान बाबर को अपना आदर्श नहीं मानते' बाबर को भारत कौन लाया? राणा सांगा ने ही उसे इब्राहिम लोदी को हराने के लिए आमंत्रित किया था। इस तर्क से, अगर आप दावा करते हैं कि मुसलमान बाबर के वंशज हैं, तो आप भी राणा सांगा के वंशज हैं, जो देशद्रोही हैं। हम बाबर की आलोचना करते हैं, लेकिन राणा सांगा की नहीं।'

जब विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ था, तब इस मुद्दे पर बोलते हुए दलित नेता ने कहा था, 'जब तक मैं जीवित हूं, मैं माफी नहीं मांगूंगा।' सिसोदिया वंश से आने वाले राणा सांगा मेवाड़ के राजा बने और वर्तमान राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शासन किया। यह विवाद महाराष्ट्र में 17वीं सदी के मुगल बादशाह औरंगजेब की विरासत को लेकर हुए सांप्रदायिक संघर्ष के कुछ दिनों बाद सामने आया है, जिसने संभाजी महाराज का सिर कलम कर दिया था, जो मराठा-मुगल संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। अब, सत्तारूढ़ भाजपा और विपक्षी दल, खासकर सपा, राजपूत-मुगल संबंधों के ऐतिहासिक संस्करणों पर झगड़ रहे हैं, उनकी नज़र उत्तर भारत में राजपूत और दलित मतदाताओं पर है।

जैसे ही राज्यसभा की कार्यवाही शुक्रवार को फिर से शुरू हुई, संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा, 'इस सदन में हमारे एक नायक का अपमान किया गया है। हम पूछते हैं कि क्या कांग्रेस और अन्य दल इससे सहमत हैं, क्योंकि यह सिर्फ एक सांसद का मामला नहीं है।' उत्तर प्रदेश से भाजपा के राज्यसभा सांसद राधा मोहन अग्रवाल ने कहा, 'यह मुद्दा उसी दिन सुलझ सकता था अगर उन्होंने (सुमन) माफी मांग ली होती।' सुमन का बचाव करते हुए विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, 'मैं महाराणा प्रताप और राणा सांगा जैसे देशभक्तों का सम्मान करता हूं, जिन्होंने देश के लिए लड़ाई लड़ी। हालांकि, अगर इतिहासकारों के बीच मतभेद हैं, तो यह किसी को भी किसी का घर बुलडोज़ करने और तोड़फोड़ करने का अधिकार नहीं देता। हम दलितों के खिलाफ किसी भी प्रकार की हिंसा का कड़ा विरोध करते हैं।'

इसके बाद रिजिजू ने खड़गे द्वारा सांसद के बयान को उनकी जाति से जोड़ने पर सवाल उठाया। 'आप उनकी जाति पर जोर क्यों दे रहे हैं? किसी भी संगठन द्वारा की गई कोई भी हिंसा अनुचित है। लेकिन, यह एक लापरवाह टिप्पणी के बारे में है, जो एक राष्ट्रीय नायक का अपमान करती है, और सदस्य को बिना शर्त माफी मांगनी चाहिए।'

'राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने भी इस बयान की निंदा करते हुए कहा कि इसे आचार समिति द्वारा देखा जाना चाहिए।'

जैसे ही बीजेपी रामजी लाल सुमन से माफी की मांग को लेकर दबाव बढ़ा रही है, इंडिया गठबंधन, खासतौर पर समाजवादी पार्टी (सपा), दलित सांसद के घर पर हुए हमले पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इससे पहले, रविवार को सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने सुमन की टिप्पणी का समर्थन करते हुए कहा, 'हर कोई इतिहास के पन्ने पलट रहा है। अगर रामजी लाल सुमन ने इतिहास के किसी दूसरे पन्ने का संदर्भ दिया, जिसमें कुछ तथ्य मौजूद हैं, तो इसमें दिक्कत क्या है?'

यह विवाद बीजेपी के लिए भी एक अवसर प्रदान करता है। पार्टी के शीर्ष नेता अब राजपूत प्रतीक के 'अपमान' के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। चूंकि राजस्थान में राजपूत समुदाय कुल जनसंख्या का लगभग छह प्रतिशत है और एक प्रभावशाली शक्ति है, इसलिए राज्य में बीजेपी के विरोध सबसे ज्यादा मुखर हैं। उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनावों पर भी इस घटनाक्रम का प्रभाव पड़ सकता है। लोकसभा चुनावों में दलितों और पिछड़ी जातियों के बीजेपी से अलग होने के कारण पार्टी को भारी नुकसान हुआ था। वहीं, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में राजपूतों की नाराजगी ने भी बीजेपी के वोट शेयर को नुकसान पहुंचाया, जहां यह समुदाय एक महत्वपूर्ण मतदाता समूह है।

उत्तर प्रदेश बीजेपी इकाई के एक उपाध्यक्ष ने कहा कि हम इसे राजनीतिक नुकसान के रूप में नहीं देख रहे क्योंकि हम इस नैरेटिव को नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन हम इस विवाद को सांसद की जाति से जोड़ने से बच रहे हैं, ताकि दलित समुदाय में नाराजगी न फैले।'

राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर शशि कांत पांडेय ने कहा, 'राणा सांगा सिर्फ मेवाड़ के राजपूत राजा नहीं थे, जिन्होंने मुगलों से लड़ाई लड़ी, बल्कि बीजेपी के राष्ट्रवाद के एजेंडे का हिस्सा भी हैं। दूसरी ओर, अखिलेश यादव ने बुधवार को अधिक सुलहकारी रुख अपनाया। इतिहासकार इस बात पर विभाजित हैं कि क्या राणा सांगा ने बाबर को भारत आने के लिए आमंत्रित किया था। 'बाबरनामा' में राणा सांगा की बाबर के साथ बातचीत का उल्लेख मिलता है: 'यदि सम्मानित बादशाह उस ओर से दिल्ली के निकट आते हैं, तो मैं इस ओर से आगरा की ओर बढ़ूंगा', यह मुगल सम्राट के संस्मरणों के ब्रिटिश अनुवादक एनेट बेवेरिज द्वारा किए गए अनुवाद के अनुसार है। इतिहासकार सतीश चंद्र ने अपनी पुस्तक मध्यकालीन भारत में उल्लेख किया कि पंजाब के गवर्नर दौलत खान लोदी ने बाबर को सुल्तान इब्राहिम लोदी के खिलाफ लड़ने के लिए आमंत्रित किया था और राणा सांगा ने भी भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक को एक दूत भेजा था। प्रसिद्ध इतिहासकार जदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक 'मिलिट्री हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में हालांकि राणा सांगा के आमंत्रण के विचार को खारिज करते हुए जोर दिया कि बाबर की महत्वाकांक्षाएं और लोदी विद्रोहियों के साथ उसके गठबंधन ही उसके आक्रमण के मुख्य कारण थे।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

देशभर में ईद मनी, सजदे में झुके सिर

नमाज अदा कर मांगी अमन-भाईचारे की दुआ, पीएम मोदी ने बधाई दी, वक्फ बिल के विरोध में नमाजियों ने काली पट्टी बांधी

फोटो: प्रवीण वाजपेय

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में ईद-उल-फितर (मीठी ईद) त्योहार मनाया गया। मस्जिदों और ईदगाहों में ईद की नमाज अदा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को ईद की बधाई दी है। उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा- ईद का त्योहार हमारे समाज में आशा, सद्भाव और दयालुता की भावना को बढ़ाए। आपके सभी प्रयासों में खुशी और सफलता मिले। ईद मुबारक!

वाराणसी की जामा मस्जिद में एक साथ बड़ी संख्या में नमाजी पहुंच गए। इसके चलते सभी लोगों को मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जगह नहीं मिली। इसके बाद कुछ लोगों ने सीढ़ियों पर ईद की नमाज अदा की। देश में कई जगह नमाज अदा करने के लिए लोग वक्फ बिल के विरोध में काली पट्टियां बांधकर पहुंचे। बिहार के सीएम नीतीश कुमार ईद के कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए पटना के गांधी मैदान पहुंचे।

भोपाल में काली पट्टी बांधकर ईद की नमाज-फिलिस्तीन के समर्थन में बैनर, मंत्री बोले-उन्माद की कोशिश बर्दाश्त नहीं

देशभर के साथ मध्यप्रदेश में भी आज सोमवार को ईद-उल-फितर का त्योहार मनाया जा रहा है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, रतलाम समेत सभी शहरों के ईदगाह और मस्जिदों में सुबह नमाज-ए-खास अदा कर अमन-चैन और खुशहाली की दुआ मांगी गई। भोपाल में कई मुस्लिम धर्मावलंबी बांह पर काली पट्टी बांधकर नमाज पढ़ने पहुंचे। वे वक्फ अमेंडमेंट बिल का विरोध कर रहे थे। वहीं, ईदगाह के बाहर कुछ युवा फिलिस्तीन के समर्थन में बैनर लेकर खड़े नजर आए। मोती मस्जिद में भी यमन और फिलिस्तीन के साथ वक्फ बोर्ड की जायदाद की हिफाजत के लिए भी दुआ पढ़ी गई। इस पर मंत्री विश्वास सारंग ने कहा, बिना बिल पढ़े उसका विरोध करना गलत है। जब पाकिस्तान आतंकवादी हमला करता है, बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार होते हैं और कश्मीर में पंडितों पर जुल्म होता है, तब काली पट्टी क्यों नहीं बांधी जाती?

इंदौर में दिखा गजब नजारा, हिंदू की बग्घी पर बैठकर ईदगाह पहुंचे शहर काजी, 50 साल पुरानी है यह परंपरा - इंदौर में सोमवार को ईद-उल-फितर पर सांप्रदायिक सद्भाव का अनूठा नजारा देखने को मिला। करीब पांच दशक पुरानी परंपरा के तहत एक हिंदू परिवार शहर काजी को घोड़े की बग्घी पर बैठाकर मुख्य ईदगाह ले गया।

वहां के लोगों ने बताया कि शहर के रहने वाले सत्यनारायण सलवाड़िया शहर काजी मोहम्मद इशरत अली को उनके राजमोहल्ला स्थित घर से घोड़े की बग्घी पर बैठाकर पूरे सम्मान से सदर बाजार के मुख्य ईदगाह ले गए और सामूहिक नमाज के बाद उन्हें वापस उनके घर छोड़ा। सलवाड़िया ने बताया कि ईद की यह रिवायत उनके पिता रामचंद्र सलवाड़िया ने करीब 50 साल पहले शुरू की थी और वर्ष 2017 में उनके निधन के बाद वह यह परंपरा निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम इस परंपरा के जरिये शहरवासियों को आपसी भाईचारा बनाए रखने का संदेश देते हैं। यह परंपरा मेरा परिवार हमेशा बरकरार रखेगा। शहर काजी मोहम्मद इशरत अली ने कहा कि देश में इंदौर इकलौता शहर है जहां एक हिंदू परिवार ईद की सामूहिक नमाज अदा कराने के लिए शहर काजी को पूरे मान-सम्मान से ईदगाह ले जाता हो।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की घोषणा पर हुआ अमल

प्रदेश के 19 नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में एक अप्रैल से बंद हो जाएंगी शराब की दुकानें

लोकमाता अहिल्याबाई की नगरी महेश्वर में हुई केबिनेट में लिया था निर्णय

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा प्रदेश के 19 धार्मिक नगरों एवं ग्राम पंचायतों में की गई शराब बंदी की घोषणा पर एक अप्रैल 2025 से अमल शुरू हो जायेगा। मुख्यमंत्री की इस घोषणा को 24 जनवरी 2025 को लोकमाता अहिल्याबाई की नगरी महेश्वर में हुई केबिनेट ने मंजूरी दी थी। निर्णय अनुसार उज्जैन, ओंकारेश्वर, महेश्वर, मण्डलेश्वर, ओरछा, मैहर, चित्रकूट, दतिया, पन्ना, मण्डला, मुलताई, मंदसौर और अमरकंटक की सम्पूर्ण नगरीय सीमा में एवं सलकनपुर, कुण्डलपुर, बांदकपुर, बरमानकलां, बरमानखुर्द और लिंगा की ग्राम पंचायत सीमा में समस्त मदिरा दुकानों एवं बार को बंद किया जाएगा। प्रदेश के इन 19 नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों को पूर्णतः पवित्र घोषित करते हुए एक अप्रैल 2025 से पूर्ण शराब बंदी कर दी गई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा नशामुक्ति की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाया गया। यह कदम जन-आस्था और धार्मिक दृष्टि से श्रृद्धा के 19 नगरीय क्षेत्र एवं ग्राम पंचायतों में प्रभावशाली होगा। जिन धार्मिक स्थान पर शराब बंदी का निर्णय लिया उसमें एक नगर निगम, 6 नगर पालिका, 6 नगर परिषद और 6 ग्राम पंचायतें हैं। जिन प्रमुख पवित्र नगरों में शराबबंदी लागू की जा रही है उनमें बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन, प्रदेश की जीवन रेखा मानी जाने वाली नर्मदा नदी का उद्गम अमरकंटक, महेश्वर, ओरछा रामराजा मंदिर क्षेत्र, ओंकारेश्वर, मंडला में सतधारा क्षेत्र, मुलताई में ताप्ती उद्गम क्षेत्र, पीतांबरा देवीपीठ दतिया, जबलपुर भेड़ाघाट क्षेत्र, चित्रकूट, मैहर, सलकनपुर, सांची, मंडलेश्वर, वान्द्रावान, खजुराहो, नलखेड़ा, पशुपतिनाथ मंदिर क्षेत्र मंदसौर, बरमान घाट और पन्ना शामिल हैं। एक अप्रैल 2025 से इन सभी क्षेत्र में पूर्ण शराब बंदी रहेगी। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव महेश्वर में 'राष्ट्रसमर्था-देवी अहिल्या की पुण्यगाथा' नाटय मंचन कार्यक्रम में शामिल हुए थे। मुख्यमंत्री ने महेश्वर में राष्ट्रसमर्था-देवी अहिल्या की पुण्यगाथा नाट्य मंचन अन्य अतिथियों के साथ देखा।

प्रदेश में परिवहन सेवाओं को और बेहतर बनाया जाएगा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के ग्रामीण, शहरी और इंटरसिटी परिवहन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाएगा। इसके लिए मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा प्रारंभ की जाएगी। योजना का प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है। सबके साथ विस्तृत विचार-विमर्श, सुझाव एवं सहमति के बाद शीघ्र ही इस योजना प्रस्ताव को अनुमोदन के लिये मंत्रि-परिषद की बैठक में लाया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में नवीन परिवहन सेवा (मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा) के संबंध में प्रारंभिक चर्चा के लिए आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में परिवहन सेवाओं को और बेहतर बनाया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर प्रदेश के सभी जनजातीय क्षेत्रों में सुगम यात्री परिवहन के लिए सरकार हर जरूरी प्रयास करेगी। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल, नगरीय विकास एवं प्रशासन मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने बैठक में वर्चुअली सहभागिता की। समत्व में हुई बैठक में स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव नगरीय विकास एवं प्रशासन श्री संजय कुमार शुक्ल, सचिव परिवहन श्री मनीष सिंह, सचिव मुख्यमंत्री श्री सिबी चक्रवर्ती एवं संचालक जनसम्पर्क श्री अंशुल गुप्ता सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की यात्री परिवहन संबंधी भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इस नवीन योजना के सभी पक्षों पर गहनता से अध्ययन करें, जिससे यात्रियों को इसका अधिकतम लाभ मिल सके। सचिव परिवहन श्री मनीष सिंह ने नवीन परिवहन सेवा योजना की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नई परिवहन योजना में प्रदेश में यात्री बसों के संचालन की त्रि-स्तरीय मॉनिटरिंग की जाएगी। इसके लिए प्रदेश मुख्यालय स्तर पर एक राज्यस्तरीय होल्डिंग कंपनी गठित की जाएगी। प्रदेश के सात बड़े संभागों (भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, सागर एवं रीवा) में 7 क्षेत्रीय सहायक कंपनियां भी गठित की जाएगी।

सम्राट विक्रमादित्य हेरिटेज, इतिहास जीवंत करेगा : सीएम डॉ. यादव

विक्रमोत्सव

डॉ. जफर महमूद

उज्जैन से

सम्राट विक्रमादित्य की पुण्य भूमि पर एक और नया अध्याय लिखा गया है। यह बात माननीय राज्यपाल मंगु भाई पटेल ने मुख्य अतिथि के रूप में आज उज्जैन में सम्राट विक्रमादित्य हेरिटेज के शुभारंभ के अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय विधि और न्याय एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) अर्जुन राम मेघवाल, प्रदेश के उच्च शिक्षा, तकनिकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री इन्दरसिंह परमार उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि के रूप मे संबोधित करते हुए राज्यपाल मंगु भाई पटेल ने सम्राट विक्रमादित्य हेरिटेज के शुभारंभ एवं विक्रम संवत 2080 की शुरूआत पर शुभकामना देते हुए कहा कि जहां महाकाल स्वयं विराजते हैं, जहां कालिदास ने अमर रचनाएं रची हैं। जहां विक्रमादित्य ने न्याय की सम्पूर्ण आधारशिला रखी है, इस पुण्य भूमि पर 'सम्राट विक्रमादित्य हेरिटेज' का शुभारंभ कर आज एक और इतिहास रचा गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश विरासत से विकास की ओर अगसर है। आज से नये युग का प्रादुभाव हो रहा है। उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का काल रामराज्य की तरह रहा है। सनातन संस्कृति से श्रेष्ठ परमंपराओं को पुनः जीवित किया जाना चाहिए। आज उज्जैन का गौरव दिवस है। हमें अतीत से वर्तमान तक व्यवस्थाओं पर गौरव करना चाहिए। इस अवसर पर केन्द्रीय राज्यमंत्री मेघवाल ने कहा कि राजस्थान के बिकानेर जिले के भीकमपुर में भी एक बड़ा महल है। यह भी विक्रमादित्य कालीन प्रतीत होता है, यह शोध का विषय है। इस अवसर पर क्षेत्रीय सांसद अनिल फिरोजिया, क्षेत्रीय विधायक अनिल जैन कालूखेड़ा, शिवप्रकाश , महापौर मुकेश टटवाल, नगर निगम अध्यक्ष कलावती यादव, प्रमुख सचिव शिवशेखर शुक्ल उपस्थित थे।

वक्फ संशोधन बिल 2 अप्रैल को पेश हो सकता है

रिजिजू बोले- इसकी तैयारी कर रहे; शाह ने कहा था- इसी सत्र में लाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल को 2 अप्रैल को संसद में पेश किया जा सकता है। सरकार पहले लोकसभा में बिल पेश करेगी। सत्र 4 अप्रैल तक चलेगा।संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा- हम संसद में वक्फ संशोधन विधेयक पेश करने की तैयारी कर रहे हैं। बिल पर संसद के बाहर खूब विचार-विमर्श हुए हैं। हमें सदन में बहस और चर्चा में भी जरूर भाग लेना चाहिए।रिजिजू ने कहा- बिल पर बनी जेपीसी ने लोकतांत्रिक भारत के इतिहास में अब तक की सबसे ज्यादा परामर्श प्रक्रिया का रिकॉर्ड बनाया है। सभी राजनीतिक दलों से अनुरोध है कि लोगों को गुमराह न करें। गृह मंत्री अमित शाह ने 29 मार्च को एक निजी चैनल से बातचीत में इसी सत्र (बजट सत्र) में वक्फ बिल संसद में पेश करने की बात कही थी।

सुप्रभात

मेरे पास कुछ भी बचा नहीं रह गया है
बार-बार छूकर देख रहा हूँ, खुद भी
कितना बचा रह गया हूँ

शहर- शहर दर-बदर भटकते किराये
की यादों ने छीन लिया है मेरा गाँव

जब भी कोई जगह छूटी,
कुछ न कुछ छूट गया वहां,
कहीं चौकी, कहीं पीढ़ा
तो कहीं मां का दिया हुआ
टीन का बक्सा

कुछ शब्द भी घिसते-घिसते पसीने के
साथ बह गए या बदल गए

सुना था बोलियां बहुत मीठी होती हैं
लेकिन वे भी आईं
मुंह टेढ़ा किये हुए
जब भी किसी के
सामने दोस्ती का हाथ बढ़ाता,
जुबान भेद खोल देती

अब जब पूरी तरह कंगाल हो गया हूँ
गाँव लौटने का मन करता है

संदेह है कि मेरे पास जो बोली बची है
वह वही है जो मेरे पिता, मेरी मां और मेरे
बचपन के दोस्त बोलते थे

मेरी बोली में विस्थापन के तमाम
उच्चारण शामिल हो गये हैं

डर लगता है कि गाँव जाऊं तो मेरे अपने
ही घुसपैठिया कहकर दुकरा न दें।

- सुभाष राय

भोपाल का तापमान
अधिकतम 22°c
न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार,1 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

तृतीय मां चंद्रघंटा

देवी मां के तृतीय ईश्वरीय स्वरूप का नाम मां चन्द्रघण्टा है।'चंद्र' हमारी बदलती हुई भावनाओं, विचारों का प्रतीक है (ठीक वैसे ही जैसे चन्द्रमा घटता व बढ़ता रहता है)। 'घंटा' का अर्थ है जैसे मंदिर के घण्टे-घड़ियाल।

राजस्थान में गणगौर की सवारी में दिखे सांस्कृतिक नजारे

जोधपुर में 2 किलो सोने के गहने पहनकर निकली गवर माता, जयपुर में शाही अंदाज में निकली, लोगों के बीच पहुंचा 'पीके'

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर सहित पूरे राजस्थान में आज गणगौर की सवारी निकाली। जयपुर में हाथी, ऊंट, घोड़ों के साथ राजसी ठाठ-बाट के साथ सवारी निकली है। त्रिपोलिया गेट पर जयपुर के पूर्व राजपरिवार सदस्य पद्मनाभ सिंह ने गणगौर माता की पूजा-अर्चना की।

जोधपुर में 2 किलो सोने के गहनों से सजी गवर माता की सवारी पेला मूंदड़ों की गली, राखी हाउस से शुरू हुई। यहां 30 झांकियां, चार बैंड सहित भगवान शिव की झांकी भी सजाई गई है। शोभायात्रा के दौरान ड्रोन से फूल बरसाए जा रहे हैं। जगह-जगह गणगौर का स्वागत किया गया। लोक कलाकार कच्छी घोड़ी, गेर समेत कई तरह के फोक डांस करते नजर आए। बहरुपिया कलाकारों ने अपने स्वांग से सैलानियों और लोगों को आकर्षित किया।

उदयपुर में जगदीश चौक से निकली गणगौर की सवारी के आगे कलाकारों ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। उदयपुर में नाव पर गणगौर की सवारी निकाली गई है।

● भरतपुर में बैंड-बाजों के साथ निकली गणगौर की शोभायात्रा

भरतपुर में गणगौर माता की शोभायात्रा लक्ष्मण मंदिर चौराहे से शुरू हुई। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए शहर में जगह-जगह पुलिसकर्मी तैनात किए गए। शोभायात्रा में 7 बैंड शामिल थे।

सवाई माधोपुर : महिलाओं ने की गणगौर माता की पूजा- सवाई माधोपुर के चौथ का बरवाड़ा कस्बे में गणगौर की सवारी शाही ठाठ-बाट से निकाली गई। सिक्स सेंस फोर्ट से निकली सवारी में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। महिलाओं ने सामूहिक रूप से पूजा-अर्चना भी की। गणगौर की सवारी को देखने के लिए होटल में मौजूद पर्यटक भी पहुंचे। चौथ का बरवाड़ा ग्राम पंचायत की ओर से गणगौर की शाही सवारी का पूरा इंतजाम किया गया।

सूटकेस छोटा पड़ा तो सौरभ को काटकर ड्रम में भरा

● साहिल-मुस्कान ने 10-12 बार में गला काटा; मेरठ हत्याकांड में हो रहें चौंकाने वाले खुलासे

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ में सौरभ राजपूत मर्डर के 27 दिन बीत चुके हैं। इस हत्याकांड में 3 स्तर पर जांच चल

रही है। पहली- पुलिस, दूसरी- फोरेंसिक टीम और तीसरी-साइबर सेल। पुलिस केस डायरी, साइबर सेल की मोबाइल जांच के बाद अब फोरेंसिक टीम की जांच में कई चौंकाने वाले खुलासे सामने आ रहे हैं।

साहिल और मुस्कान ने सौरभ के टुकड़ों को पहले सूटकेस में भरकर ठिकाने लगाने का प्लान बनाया था, लेकिन उस हिसाब से सूटकेस छोटा पड़ गया। इस पर अगले दिन मुस्कान ड्रम खरीदकर लाई और उसमें बॉडी के टुकड़े सीमेंट से सील कर दिए।

मुंबई हाईकोर्ट का फैसला

26 हफ्ते के भ्रूण का करा सकते हैं गर्भपात, पर माननी होगी ये शर्त

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाई कोर्ट ने 32 वर्षीय गर्भवती महिला को उसके 26 हफ्ते के गर्भ को एक निजी अस्पताल में अपना गर्भपात कराने की अनुमति देते हुए कहा कि उसे प्रजनन का चुनाव करने या नहीं करने का अधिकार है।

साथ ही, शारीरिक स्वायत्तता और चुनाव करने का अधिकार है। हृदय संबंधी रोग से ग्रस्त भ्रूण को जन्म लेने नहीं देने की मां की संवेदना को ही अदालत ने उनकी इच्छा मानते हुए उसका सम्मान किया। जस्टिस रेवती मोहिते डेरे और नीला गोखले की खंडपीठ ने सोमवार को एक निजी अस्पताल में याचिकाकर्ता गर्भवती महिला को अपना गर्भ गिराने की अनुमति देते जब उस अस्पताल ने अपने हलफनामे में बताया कि इस मामले में मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेगनेंसी (एमटीपी) एक्ट के तहत सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा रही है। एमपीटी एक्ट के प्रविधानों में 24 हफ्ते से अधिक के गर्भ का किसी निजी अस्पताल में गर्भपात बिना अदालत की अनुमति के नहीं हो सकता है। हाई कोर्ट ने अपना यह आदेश विगत 28 मार्च को दिया था। अदालत के इस फैसले के बाद महिला की अपील के अनुरूप उस आपरेशन को अंजाम दिया गया जिससे भ्रूण की हृदयगति रुक जाए। हालांकि खंडपीठ ने इस बात का भी निर्देश दिया कि सरकारी जेजे अस्पताल के मेडिकल बोर्ड की गर्भपात की बेहतर विधि के संबंध में सलाह ली जा सकती है। मुंबई की रहने वाली याचिकाकर्ता का कहना था कि वह अपने मनचाहे अस्पताल में ही गर्भपात कराना चाहती है।

केंद्र सरकार शिक्षा के प्रति उदासीन है : सोनिया गांधी

शिक्षा नीति में 3सी एजेंडा, इससे केंद्रीकरण, व्यवसायीकरण और सांप्रदायिकता बढ़ेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की आलोचना की है। अंग्रेजी अखबार द हिंदू के एक आर्टिकल में सोनिया गांधी ने लिखा, 'केंद्र सरकार शिक्षा नीति के माध्यम से अपने 3 सी एजेंडे (केंद्रीकरण, व्यवसायीकरण और सांप्रदायिकता) को आगे बढ़ा रही है। शिक्षा नीति भारत के युवाओं और बच्चों की शिक्षा के प्रति सरकार की गहरी उदासीनता को दिखाती है।

म.प्र. में 25 लाख मध्यमवर्गीय उपभोक्ता को मिली राहत, 151-300 यूनिट का स्लैब बरकरार

एमपी में बिजली की नई दरें लागू, मध्यमवर्गीय उपभोक्ताओं को राहत

भोपाल/जबलपुर(नप्र)। मध्य प्रदेश में बिजली की नई दरें लागू हो चुकी हैं। मप्र विद्युत नियामक आयोग ने 3.46 प्रतिशत औसत दरें बढ़ा दी हैं। इसके बीच, करीब 25 लाख ऐसे मध्यमवर्गीय घरेलू उपभोक्ता हैं, जो 150 यूनिट मासिक खपत कर सब्सिडी से बाहर हो जाते, लेकिन उनका भी ख्याल आयोग ने रखा है।

बिजली कंपनी ने अपने प्रस्ताव में 151 यूनिट के बाद बिजली के फ्लैट दाम तय करने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन आयोग ने इसे अस्वीकार कर दिया। एमपी पावर मैनेजमेंट कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए कुल राजस्व आवश्यकता 58,744 करोड़ और वर्तमान दरों पर प्राप्त राजस्व 54,637 करोड़ बताया। इस अंतर की राशि 4107 करोड़ रुपये की भरपाई के लिए औसत 7.52 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी का प्रस्ताव दिया था। आयोग ने सभी पक्षों को सुनने के बाद 57,732.6 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं।

यह था प्रस्ताव- बिजली कंपनी के प्रस्ताव में घरेलू उपभोक्ताओं की चार श्रेणी को तीन श्रेणी में समेट दिया था। पहली श्रेणी 50 यूनिट, दूसरी श्रेणी 51 से 150 यूनिट और तीसरी श्रेणी 151 से ऊपर की रखी गई। अभी 151 से 300 यूनिट की श्रेणी के लिए अलग दर तय है। कंपनी 151 के ऊपर एक दर तय करना चाह रही थी। इससे 50 पैसे प्रति यूनिट का बोझ उपभोक्ता पर डालने का प्रस्ताव था।

आर्थिक बोझ से बचे- प्रदेश में अभी एक करोड़ 27 लाख कुल घरेलू उपभोक्ता हैं। बिजली कंपनी करीब एक करोड़ उपभोक्ताओं को सब्सिडी देती है। ये उपभोक्ता 150 यूनिट मासिक खपत के दायरे में आते हैं। अभी कंपनी 100 यूनिट के लिए 100 रुपये और अगली 50 यूनिट पर सामान्य दर से बिलिंग करती है।

इससे उपभोक्ता को करीब 450 रुपये से अधिक की बचत होती है। इस बीच 25 लाख से ज्यादा ऐसे बिजली उपभोक्ता हैं जिनकी मासिक खपत 151 से 300 यूनिट के भीतर रहती है। ऐसे उपभोक्ता स्लैब बरकरार रहने से अधिक आर्थिक बोझ पड़ने से बच गए हैं।

नाबालिग छात्रा को जबरन बैठाया, कार लेकर भागे

ग्वालियर में पुलिस ने रोका तो बैरिकेड्स को टक्कर मारी; दो आरोपी हिरासत में

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में नाबालिग छात्रा को जबरन कार में बैठाकर भागने की कोशिश कर रहे दो युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। फिलहाल, पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। मामला अपहरण का है या फिर आपसी विवाद का, इसकी पड़ताल की जा रही है।

पुलिस के मुताबिक, कंट्रोल रूम में फोन कर किसी ने छात्रा के अपहरण की सूचना दी थी। उसने कार के चेतकपुरी माधवनगर से महाराजबाड़ा की तरफ जाने की बात कही। जिस पर पुलिस ने इलाके की घेराबंदी कर दी। करीब 25 मिनट बाद रॉक्सीपुल पर पुलिस ने कार को ट्रैस कर लिया।

गाड़ी रोकने के लिए पुलिसकर्मियों ने बैरिकेड्स लगाए। कार सवारों को रुकने की चेतावनी दी। ड्राइवर ने बैरिकेड्स को टक्कर मारते हुए कार भगाने की कोशिश की। लेकिन मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने उन्हें पकड़ लिया। लड़की समेत दोनों युवकों से माधौगंज थाने में पूछताछ की जा रही है।

आर्यन सक्सेना, आरोपी

25 मिनट तक शहर में घुमाते रहे कार- माधौगंज पुलिस के मुताबिक, ग्वालियर के माधवनगर गेट से मारुति स्विफ्ट कार में सवार दो युवक लड़की को जबरन अपने साथ ले जा रहे थे। सोमवार दोपहर 12 बजे सूचना पुलिस कंट्रोल रूम को मिली। जिसे सभी पॉइंट्स पर फॉरवर्ड किया गया। शहर के नाकाबंदी पॉइंट पर चेकिंग लगा दी गई।

पुलिस के कई चेकिंग पॉइंट से बचती हुई कार करीब 25 मिनट बाद माधौगंज थाना इलाके में रॉक्सीपुल पर दिखी। वहां मौजूद हवलदार ने सड़क पर बैरिकेड्स लगाकर उसे रोकने की कोशिश की। कार सवार युवकों ने बैरिकेड्स में टक्कर मार दी, लेकिन भाग नहीं सके।

अपहरण या आपसी विवाद, जांच कर रहे- पुलिस फिलहाल आरोपी आर्यन शुक्ला और अभिषेक नारवे से पूछताछ कर रही है। एएसपी कृष्ण लालचंदानी ने कहा- पुलिस को ऐसी सूचना मिली थी कि एक लड़की का कार सवारों ने अपहरण किया है। जिस पर घेराबंदी कर कार को रॉक्सी पुल पर पकड़ लिया गया है। फिलहाल पूछताछ की जा रही है कि असल मामला क्या है?

● तेलंगाना हाईकोर्ट का एक बड़ा फैसला

पहली पत्नी को नहीं दिया तलाक, झूठ बोलकर की सेकेंड मैरिज, दूसरी पत्नी को गुजारा भत्ता का अधिकार

हैदराबाद (एजेंसी)। अगर पहली पत्नी से तलाक लिए बिना दूसरी शादी की जाती है, तो वह शादी शुरू से ही अवैध मानी जाएगी। अगर दूसरी पत्नी को शादी से पहले झूठी जानकारी देकर यानी धोखे से सहमति ली गई तो यह रेप माना जाएगा। ऐसी स्थिति में दूसरी पत्नी गुजारा भत्ते की हकदार भी है। तेलंगाना हाई कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के एक फैसले के खिलाफ की गई अपील पर सुनवाई करते हुए जस्टिस मौसमी भट्टाचार्य और जस्टिस बी.आर. मधुसूदन राव की बेंच ने यह फैसला दिया। हैदराबाद फैमिली कोर्ट ने दूसरी पत्नी के गुजारा भत्ता की मांग को खारिज कर दिया था।

तलाक दिए बिना की शादी

एक शख्स की दूसरी पत्नी ने हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 11 (अवैध विवाह), धारा 5 (हिंदू विवाह के लिए शर्तें) और धारा 25 (स्थायी गुजारा भत्ता) के तहत याचिका दायर की थी। कोर्ट को महिला ने बताया कि उसके पति ने पहली पत्नी को तलाक दिए बिना उससे शादी की।

औरंगजेब कब्र विवाद पर बोले सुरेश भैयाजी जोशी

औरंगजेब विवाद गैरजरूरी है

नागपुर (एजेंसी)। मुगल शासक औरंगजेब की कब्र को लेकर महाराष्ट्र में काफी समय से सियासी घमासान जारी है। हिंदू संगठनों द्वारा छत्रपति संभाजीनगर में स्थित औरंगजेब की कब्र को हटाने की मांग की गई थी। इसके बाद तनाव भी हुआ था। हिंदू संगठनों के विरोध प्रदर्शनों के बीच नागपुर में हिंसा सामने आई थी। इस मुद्दे पर विधानसभा में भी राजनीतिक बयानबाजी सामने आई थी। अब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सर कार्यवाह भैयाजी जोशी ने औरंगजेब के मुद्दे पर भी अपनी राय रखी है। सोमवार को नागपुर में पीएम मोदी के दौरे के बाद मीडिया से मुखातिब हुए भैयाजी जोशी ने कहा कि औरंगजेब का विषय बिना वजह उठाया जा रहा है, जो ठीक नहीं है। उनकी मृत्यु यहां हुई, तो लोग उनकी कब्र पर जाएंगे। यह उनकी श्रद्धा है। जो जाना चाहते हैं, वे जाएं। इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। जोशी ने इस मुद्दे को अनावश्यक विवाद बताते हुए इसे तूल न देने की सलाह दी।

व्हाट्सअप फारवर्ड पर न करें भरोसा- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के वरिष्ठ नेता सुरेश 'भैयाजी' जोशी ने कहा कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना प्रमुख (मनसे) राज ठाकरे ने रविवार को औरंगजेब की कब्र को लेकर सांप्रदायिक तनाव भड़काने के प्रयासों की निंदा करते हुए कहा था कि इतिहास को जाति और धर्म के चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। उन्होंने लोगों से ऐतिहासिक जानकारी के लिए व्हाट्सएप फॉरवर्ड पर भरोसा न करने के लिए कहा।

गणगौर पूजा के दौरान आग से झुलसी पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास, अस्पताल में भर्ती

उदयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के उदयपुर में गणगौर पूजा के दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास आग से झुलस गईं। व्यास की चुन्नी दीपक की लौ की चपेट में आ गई। परिवार ने तुरंत उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया और बाद में बेहतर उपचार के लिए अहमदाबाद रेफर कर दिया। कांग्रेस नेता उनकी खैरियत जानने पहुंचे। परिजनों ने बताया कि गणगौर के मौके पर सोमवार को गिरिजा व्यास अपने भाई के फार्म हाउस पर पूजा कर रही थीं। इस दौरान पूजा के बाद आरती करते समय अचानक गिरिजा व्यास की चुन्नी दीपक की लौ की चपेट में आ गई। जिसके कारण चुन्नी ने आग पकड़ ली। घटना से जैसे ही गिरिजा व्यास चिल्लाईं, तो घर में मौजूद सर्वेंट बंशी ने उन्हें तत्काल संभाला।

आज 1 अप्रैल से लागू हो रहा बजट, 6 बड़े बदलाव

टैक्स स्लैब में बड़ी राहत, नौकरीपेशा लोगों को 75 हजार का अतिरिक्त फायदा मिलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नया बजट आज 1 अप्रैल 2025 से लागू हो जाएगा। यानी, 1 फरवरी को सरकार ने बजट पेश करते हुए जो ऐलान किए थे उन पर काम शुरू होगा। हालांकि, योजनाओं का फायदा कब से मिलेगा, यह योजना के प्रकार और लागू करने की प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। आयकर छूट या सब्सिडी जैसे फायदे 1 अप्रैल 2025 से लागू हो जाते हैं, क्योंकि ये वित्तीय वर्ष के साथ जुड़े होते हैं। वहीं इन्फ्रास्ट्रक्चर और विकास परियोजनाएं, सामाजिक कल्याण योजनाओं का फायदा मिलने में समय लगता है, क्योंकि इन पर काम करने की एक लंबी प्रोसेस होती है।

बदलाव जो आज से लागू होंगे...

- **टैक्स स्लैब में बदलाव-** 20 से 24 लाख की इनकम के लिए नया स्लैब। न्यू टैक्स रिजीम के तहत अब 12 लाख रुपए तक की कमाई पर कोई टैक्स नहीं देना होगा। नौकरीपेशा लोगों के लिए 75 हजार के स्टैंडर्ड डिडक्शन के साथ यह छूट 12.75 लाख रुपए हो जाएगी।
- **टीडीएस लिमिट की सीमा बढ़ी-** 6 लाख तक की रेंटल इनकम पर टैक्स नहीं। कुछ भुगतानों पर टीडीएस (टैक्स डिडक्शन एट सोर्स) की सीमा को बढ़ाया गया है। रेंट से होने वाली इनकम पर टीडीएस की सीमा 2.4 लाख से बढ़कर 6 लाख हो गई है।
- **टीसीएस लिमिट की सीमा बढ़ी-** विदेश में पढ़ाई के लिए 10 लाख तक भेजने पर टैक्स नहीं। विदेश में पढ़ाई के लिए पैसा भेजने पर टैक्स कलेक्टेड एट सोर्स की लिमिट अब 7 लाख रुपए से बढ़कर 10 लाख रुपए हो गई है।

- **अपडेटेड रिटर्न भरने के लिए ज्यादा समय-** 48 महीने तक दाखिल कर सकेंग। अब टैक्सपेयर्स असेसमेंट ईयर के अंत से 24 महीने के बजाय 48 महीने तक अपडेटेड रिटर्न दाखिल कर सकेंगे।
- **यूलिप पर कैपिटल गेन टैक्स-** 2.5 लाख से ज्यादा प्रीमियम कैपिटल एसेट माना जाएगा। यदि यूलिप यानी, यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान का प्रीमियम प्रति वर्ष 2.5 लाख रुपए से अधिक है, तो इसे कैपिटल एसेट माना जाएगा।
- **सस्ता-महंगा-** कस्टम ड्यूटी बदलने का 150-200 प्रोडक्ट पर असर। सरकार ने फरवरी में पेश किए गए बजट में कुछ प्रोडक्ट पर कस्टम ड्यूटी घटाई थी और कुछ पर बढ़ाई थी। इससे करीब 150-200 प्रोडक्ट प्रभावित होंगे। आम तौर पर वित्तीय वर्ष की शुरुआत यानी 1 अप्रैल 2025 से कस्टम ड्यूटी में हुए बदलाव लागू होते हैं।

सीएम ने ईद व गणगौर पर्व की दी बधाई

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अखंड सौभाग्य, सुख, समृद्धि के पावन पर्व गणगौर की सभी को बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर अपने संदेश में बाबा महादेव एवं मां पार्वती से प्रार्थना की है कि गणगौर सबके जीवन में संपन्नता, शुभत्व और मंगल की उत्तरोत्तर वृद्धि लेकर आए। उन्होंने गणगौर पर कामना की है कि माता-बहनों और सभी की मनोकामनाएं पूर्ण हों।

इधर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के सभी मुस्लिम भाईयों को ईद-उल-फितर की बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

राज्यपाल पटेल ने राजभवन आगमन पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल का अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया।

लगातार चुनावी हार के बाद कांग्रेस ने बनाई रणनीति

भोपाल (नप्र)। लगातार चुनावी हार और दल-बदल से नुकसान झेल रही कांग्रेस अब जिला संगठन को मजबूत बनाने की रणनीति पर काम कर रही है। इसी कड़ी में 3 अप्रैल को दिल्ली में मध्य प्रदेश के सभी जिलाध्यक्षों की बैठक होगी।

बैठक में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल शामिल होंगे। इस दौरान जिला अध्यक्षों के कामकाज की समीक्षा की जाएगी और संगठन को मजबूत करने पर मंथन होगा।

जिलाध्यक्षों को मिलेंगे टिकट बांटने के अधिकार- कांग्रेस संगठन इस बात पर जोर दे रहा है कि जिला अध्यक्षों को अधिक अधिकार दिए जाएं ताकि वे अपने जिले में संगठनात्मक फैसलों में अहम भूमिका निभा सकें। एआईसीसी ने जिला संगठनों को सशक्त बनाने के लिए सुझाव मांगे हैं। मध्य प्रदेश कांग्रेस ने पार्षद से लेकर सांसद तक के टिकट वितरण में जिला अध्यक्षों की भूमिका को अनिवार्य करने का प्रस्ताव दिया है। चुनाव समिति की बैठकों में भी जिला अध्यक्षों की राय को प्राथमिकता दी जाएगी।

दिल्ली में बैठक, अहमदाबाद में मिलेगी अंतिम मंजूरी- दिल्ली में 3 अप्रैल को होने वाली इस बैठक में जिला अध्यक्षों की भूमिका को और प्रभावी

बनाने पर चर्चा होगी। इसके बाद 9 अप्रैल को गुजरात के अहमदाबाद में कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन में इस प्रस्ताव को पास किया जाएगा, जिसके बाद इसे पूरे देश में लागू किया जा सकता है।

कांग्रेस को जिलाध्यक्षों की बैठक की जरूरत क्यों पड़ी?- कांग्रेस मप्र में पिछले चार चुनावों से हार रही है। 2018 में कमलनाथ के नेतृत्व में सरकार बनी, लेकिन ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ दो दर्जन से ज्यादा विधायकों के दलबदल के कारण सरकार गिर गई। जिन क्षेत्रों के विधायकों ने पार्टी छोड़ी, उनके साथ बूथ स्तर तक के कई कार्यकर्ता और पदाधिकारी भी चले गए। ऐसे में दल-बदल वाले कई विधानसभा क्षेत्रों में उपचुनावों के दौरान कांग्रेस को कई बूथों पर बिना कार्यकर्ताओं के चुनाव लड़ना पड़ा और हार भी मिली। कांग्रेस ने दल-बदल से सबक लेते हुए अब यह रणनीति बनाई है कि संगठन को नेता और व्यक्ति आधारित की बजाय जिलाध्यक्ष केंद्रित किया जाए। ऐसे में जिले के संगठनात्मक फैसले जिलाध्यक्ष ही लेंगे।

म.प्र.में अवैध कॉलोनियों पर एक महीने में नया कानून

2016 से पहले की कॉलोनियां ही होंगी नियमित, अवैध निर्माण किया तो होगी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अवैध कॉलोनियों को वैध करने के नियम अब और ज्यादा सख्त होने वाले हैं। डॉ. मोहन यादव सरकार नगरपालिका एक्ट में बदलाव करने जा रही है। संशोधित कानून में अवैध कॉलोनी बनाने पर 10 साल की सजा और 50 लाख जुर्माने का प्रावधान किया जा रहा है। इसका ड्राफ्ट तैयार हो गया है। नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का कहना है कि एक महीने में नया कानून प्रभावी हो जाएगा।

मध्यप्रदेश में अवैध कॉलोनियों को नियमित करने के मौजूदा कानून में सजा और जुर्माने के प्रावधान में बदलाव के साथ ये भी तय किया जा रहा है कि 2016 से पहले बनी अवैध कॉलोनियों को वैध किया जाए या 2022 के पहले बनी? इस पर अभी सहमति नहीं बनी है। हालांकि, पिछले साल नगरीय प्रशासन मंत्री ने जब अवैध कॉलोनियों की समीक्षा की थी, तब जिला कलेक्टरों से 2016 की अवैध कॉलोनियों का डेटा मांगा गया था।

इससे ये माना जा रहा है कि सरकार 2016 से पहले अवैध कॉलोनियों को ही नियमित कर सकती है। यदि ऐसा हुआ तो करीब 2 हजार अवैध कॉलोनियों में रहने वाले लोग प्रभावित होंगे। बता दें कि पूर्ववर्ती शिवराज सरकार ने 2022 से पहले बनी अवैध कॉलोनियों को नियमित करने का फैसला लिया था। इसका ऐलान विधानसभा चुनाव 2023 के पहले किया गया था।

कानून में संशोधन क्यों कर रही मौजूदा सरकार- मध्यप्रदेश सरकार ने अवैध कॉलोनियों को वैध करने का कानून तो बना दिया है लेकिन इसका प्रभावी पालन नहीं हो सका है। शिवराज सरकार ने साल 2016 से पहले बनी अवैध कॉलोनियों को वैध करने का फैसला लिया था। उस समय नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग ने पूरे प्रदेश में सर्वे कर ऐसी 6077 अवैध कॉलोनियां चिह्नित की थीं।

मोहन सरकार ने पिछले साल जब अवैध कॉलोनियों का डेटा जिलों से मंगाया तो पाया गया कि अवैध कॉलोनियों की संख्या 6077 से बढ़कर 7981 हो चुकी है यानी 1908 नई अवैध कॉलोनियां बन चुकी हैं। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विधानसभा के पिछले सत्र में कहा था कि प्रदेश में बन रही अवैध कॉलोनियों को सरकार वैध नहीं करेगी। इनमें रहने वाले लोगों को बुनियादी सुविधाएं मिल सकें, बिल्डिंग परमिशन मिल जाए, यह काम जरूर किया जा रहा है।

उन्होंने यह भी कहा था कि प्रदेश में अवैध कॉलोनियां एक गंभीर मुद्दा बन गई हैं। इसके लिए जल्द ही कानून लाया जाएगा। बता दें कि मप्र नगरपालिका अधिनियम 2021 की धारा 292 और 339 की उप धाराओं में अवैध कॉलोनी बनाने वालों के खिलाफ सजा और जुर्माने का प्रावधान है।

आज मुख्यमंत्री डॉ. यादव करेंगे स्कूल चलें हम अभियान-2025 का शुभारंभ

राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम भी होगा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एक अप्रैल मंगलवार को शासकीय नवीन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय अरेरा कॉलोनी (ओल्ड कैंपियन) में प्रातः 9 बजे 'स्कूल चलें हम' अभियान - 2025 का शुभारंभ करेंगे। इस अवसर पर राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम भी होगा। कार्यक्रम में जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री चैतन्य कुमार काश्यप भी मौजूद रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के स्कूल चलें हम अभियान कार्यक्रम के डिजिटल प्लेटफार्म पर लाइव प्रसारण की व्यवस्था भी की गई है।

नव प्रवेशी विद्यार्थियों का होगा स्वागत- मुख्यमंत्री डॉ. यादव कार्यक्रम में नव प्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत करेंगे। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न खेलों के प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्कूल शिक्षा विभाग के शिक्षा पोर्टल 3.0 का शुभारंभ करेंगे। प्रदेश में करीब 92 हजार सरकारी स्कूल हैं। इनमें प्रायमरी, मीडिल, हाई और हायर सेकण्डरी स्कूल हैं। इन स्कूलों में लगभग 85 लाख बच्चे अध्ययनरत हैं।

एजुकेशन पोर्टल 3.0- इस वर्ष एक अप्रैल से नवीन शैक्षणिक सत्र शुरू होने जा रहा है। प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-2025 के माध्यम से समस्त शासकीय-अशासकीय विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रवेश की कार्रवाही एजुकेशन पोर्टल 3.0 पर 'स्टूडेंड डायरेक्ट्री मैनेजमेंट सिस्टम' प्रणाली पर की जा रही है। एजुकेशन पोर्टल में स्कूल शिक्षा विभाग से संबंधित सभी कार्यों को शामिल किया गया है। विभाग से संबंधित जानकारी पोर्टल के माध्यम से सुलभ तरीके से प्राप्त की जा सकेगी।

समस्त जिलों में भी होगा प्रवेशोत्सव कार्यक्रम

प्रदेश में जिले के प्रभारी मंत्री जिला स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में एक अप्रैल को शामिल होंगे। यह कार्यक्रम चयनित शाला में होगा। कार्यक्रम में सांसद, विधायक एवं अन्य जन-प्रतिनिधि शामिल होंगे। उपस्थित छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकें वितरित की जायेंगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने ऐसी व्यवस्था की है कि नये शैक्षणिक-सत्र की शुरूआत में विद्यार्थियों को पाठ्य-पुस्तकें मिल जायें। इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी और मैदानी अमले को विभाग द्वारा निर्देश जारी कर दिये गये हैं। ग्राम और बसाहट के शाला से बाहर रहे चिन्हित बच्चों का शाला में नामांकन कराया जायेगा। बच्चों के अभिभावकों का शाला स्तर पर स्वागत किया जायेगा। कक्षा-1 से 8 तक सभी शालाओं में एक अप्रैल को बालसभा का आयोजन किया जायेगा। इस दिन शालाओं में विशेष भोजन की व्यवस्था भी की गयी है।

संभाग स्तर के 8 डिपो के माध्यम से किताबों की व्यवस्था

स्कूल शिक्षा विभाग का प्रयास है कि सरकारी स्कूलों के बच्चों को शिक्षण सत्र शुरू होते ही अप्रैल माह में निशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हो जायें। कक्षा एक से कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिये करीब 5 करोड़ 60 लाख पुस्तकें, एक करोड़ 2 लाख फाउंडेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी (एफएलएन) अभ्यास पुस्तिकाएं और करीब 26 लाख ब्रिज कोर्स की पुस्तकें निशुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं।

भविष्य से भेंट कार्यक्रम

स्कूल चलें हम अभियान के दूसरे दिन दो अप्रैल को शालाओं में ''भविष्य से भेंट'' कार्यक्रम होगा। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध, प्रबुद्ध और सम्मानित व्यक्तियों को प्रेरक की भूमिका में विद्यार्थियों से भेंट के लिये आमंत्रित किया जायेगा। इसी दिन स्थानीय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने वाले खिलाड़ी, साहित्यकार, कलाकार, मीडिया, संचार मित्रों, पुलिस अधिकारी, राज्य शासन के अधिकारी को विशेष रूप से आमंत्रित किया जायेगा। आमंत्रित अतिथि उपस्थित बच्चों को पढ़ाई के महत्व और प्रेरणादायी कहानियाँ सुनायेंगे। इस दौरान सामाजिक संस्था एवं आमंत्रित व्यक्ति स्वैच्छा से विद्यार्थियों को शाला उपयोगी वस्तुएँ भेंट कर सकेंगे। जिला कलेक्टर को जिले के प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के अधिकारियों को किसी एक शाला में जाकर एक कालखण्ड में बच्चों के साथ संवाद करने के लिये संवाद करने के भी निर्देश दिये गये हैं।

सांस्कृतिक एवं खेल-कूद गतिविधियाँ

'स्कूल चलें हम अभियान' के अंतर्गत 3 अप्रैल को शाला स्तर पर पालकों के साथ सांस्कृतिक एवं खेल-कूद की गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी। इसका उद्देश्य पालकों का विद्यालय से जुड़ाव करना है। इसी दिन शाला में उपस्थित पालकों को शैक्षणिक स्टॉफ द्वारा राज्य सरकार की स्कूल शिक्षा से जुड़ी सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जायेगी। पिछले शैक्षणिक-सत्र में जिन विद्यार्थियों की 85 प्रतिशत से अधिक उपस्थिति रही है, उनके पालकों को सभा में सम्मानित किया जायेगा।

हार के आगे जीत

'स्कूल चलें हम अभियान' के अंतर्गत 4 अप्रैल को ऐसे छात्रों को चिन्हित किया जायेगा, जो किन्हीं वजहों से कक्षोन्नति प्राप्त करने में असफल हो गये हैं। पालकों को इन बच्चों की आगे की पढ़ाई के लिये समझाइश दी जायेगी। उन्हें बताया जायेगा कि असफल होने के बाद भी लगातार प्रयास से अच्छा भविष्य तैयार किया जा सकता है। इसी दिन शाला प्रबंधन और विकास समिति की बैठक भी होगी। बैठक में नये शैक्षणिक सत्र में ऐसे बच्चों पर विशेष रूप से चर्चा की जायेगी, जिनका शालाओं में नामांकन नहीं हो पाया है। समिति के सदस्य अपने विद्यालयों में शत-प्रतिशत बच्चों के नामांकन की कोशिश करेंगे और वार्षिक कार्य-योजना बनाकर उसके क्रियान्वयन पर चर्चा करेंगे।

रानी कमलापति-हड़पसर साप्ताहिक विशेष ट्रेन शुरू

गर्मियों में सफर होगा आसान ; यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे का फैसला

भोपाल (नप्र)। गर्मियों की छुट्टियों में यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए रेलवे प्रशासन ने विशेष ट्रेनों का संचालन शुरू किया है। इसी क्रम में 01667/01668 रानी कमलापति - हड़पसर - रानी कमलापति साप्ताहिक ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेन चलाई जाएगी।

यह ट्रेन 10 अप्रैल 2025 से 27 जून 2025 तक प्रत्येक गुरुवार और शुक्रवार को संचालित होगी और कुल 12-12 ट्रिप पूरे करेगी। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि यात्रियों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

ट्रेन का संचालन और ठहराव

गाड़ी संख्या 01667 (रानी कमलापति से हड़पसर)
प्रस्थानः प्रत्येक गुरुवार, सुबह 08:35 बजे
मुख्य ठहरावः नर्मदापुरम (09:33), इटारसी (10:00), हरदा (10:58)
गंतव्य आगमनः अगले दिन 00:30 बजे हड़पसर
गाड़ी संख्या 01668 (हड़पसर से रानी कमलापति)
प्रस्थानः प्रत्येक शुक्रवार, सुबह 06:30 बजे

मुख्य ठहरावः हरदा (19:03), इटारसी (21:00), नर्मदापुरम (21:28)
गंतव्य आगमनः रात 22:55 बजे रानी कमलापति

यह ट्रेन रानी कमलापति, नर्मदापुरम, इटारसी जंक्शन, हरदा, खंडवा जंक्शन, भुसावल जंक्शन, मनमाड जंक्शन, कोपरगांव, अहमदनगर, दौंड चॉर्ड लाइन और हड़पसर स्टेशनों पर रुकेगी।

भोपाल में डकैती की योजना बनाते 7 गिरफ्तार

मोदी ज्वैलर्स को निशाना बनाने की फिराक में थे, हथियार भी बरामद

भोपाल (नप्र)। टीटी नगर पुलिस ने पंचशील नगर स्थित मोदी ज्वैलर्स पर डकैती डालने की योजना बना रहे 7 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपी बड़ी मात्रा में सोने-चांदी के जेवरात और नकदी लूटकर फरार होने की फिराक में थे। पुलिस ने बदमाशों के पास से लोहे की रॉड, पाइप, छुरे, तलवार और डंडे सहित कई हथियार भी बरामद किए।

ईद और नवरात्रि के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद करने के लिए पुलिस अधिकारियों द्वारा शहर में गश्त चलाई जा रही थी। 30 मार्च को टीटी नगर थाना प्रभारी सुधीर अरजरिया की टीम को सूचना मिली कि प्लेटिनम प्लाजा के पीछे पानी की टंकी के पास कुछ लोग हथियारों के साथ डकैती की योजना बना रहे हैं। पुलिस ने तुरंत

घेराबंदी कर उन्हें पकड़ने की कार्रवाई शुरू कर दी।

पुलिस को देखकर भागने का किया प्रयास- आरोपियों ने पुलिस को देखकर भागने का प्रयास किया। लेकिन उनमें से कई गिरने से घायल हो गए। सभी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने मौके से लोहे की रॉड, पाइप, छुरे, तलवार, डंडा और एक मोटरसाइकिल भी जब्त की। गिरफ्तार आरोपियों में से कुछ पहले से ही हत्या के प्रयास और चोरी के मामलों में वांछित थे। उन्होंने पुलिस से बचने और जमानत का इंतजाम करने के लिए बड़ी डकैती की साजिश रची थी। आरोपियों ने मोदी ज्वैलर्स को निशाना बनाने की प्लानिंग की थी, क्योंकि त्योहारी सीजन में वहां ज्यादा सोना-चांदी और नकदी होने की उम्मीद थी। इस मामले में टीटी नगर पुलिस की टीम ने सूचना मिलते ही त्वरित कार्रवाई कर बड़ी घटना को होने से रोका। थाना प्रभारी सुधीर अरजरिया, उपनिरीक्षक राघवेंद्र सिंह सिकरवार, उपनिरीक्षक नर्मदा प्रसाद और अन्य स्टाफ की भूमिका सराहनीय रही।

अप्रैल में ओले-बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम, आंधी भी चलेगी

म.प्र.के 40 जिलों में आज से 3 दिन असर; भोपाल में सुबह से बादल छाए थे

भोपाल (नप्र)। अप्रैल के शुरुआती 3 दिनों में मध्यप्रदेश में ओले-बारिश और आंधी का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव हो रहा है। इस वजह से प्रदेश के 40 से ज्यादा जिलों में असर देखने को मिलेगा। इससे पहले, सोमवार को रतलाम, मंदसौर, अलीराजपुर और बड़वानी में हल्की बारिश और बादल छाए रहेंगे। राजधानी भोपाल में सुबह से बादल छाए हुए हैं। वहीं, हवा की रफ्तार भी तेज है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, 24 घंटे के बाद मध्य महाराष्ट्र और कोंकण क्षेत्र में साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव होने की संभावना है। जिसके पठारी क्षेत्र में ट्रफ के कारण अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से नमी आनी शुरू हो जाएगी, जिससे प्रदेश में भी मौसम बदला रहेगा।

तेज आंधी चलेगी- अबकी बार अप्रैल की शुरुआत तेज गर्मी की बजाय ओले, बारिश, गरज-चमक और आंधी के साथ हो रही है। कहीं-कहीं आंधी की रफ्तार 40 से 50 किमी प्रतिघंटा तक रह सकती है।

अगले 3 दिन ऐसा रहेगा मौसम

1 अप्रैल: नर्मदापुरम, बैतूल, बुरहानपुर और खंडवा में बारिश के साथ ओले गिर सकते हैं। हरदा, खरगोन, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा में तेज आंधी और गरज-चमक की स्थिति रहेगी। यहां हवा की रफ्तार 40 से 50 किमी प्रतिघंटा तक रह सकती है। भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, बड़वानी, अलीराजपुर, झाबुआ, देवास, मंदसौर, नरसिंहपुर और सागर में 30 से 40 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चलेगी।

2 अप्रैल: नर्मदापुरम, बैतूल, बुरहानपुर, खंडवा, खरगोन, बड़वानी, धार, अनूपपुर, डिंडोरी और बालाघाट में ओले गिरने का अलर्ट है। हरदा-शिवपुरी समेत विदिशा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, अलीराजपुर, झाबुआ, इंदौर, रतलाम, उज्जैन, देवास, शाजापुर, आगर-मालवा, मंदसौर, नीमच, ग्वालियर, दतिया, भिंड, श्योपुर, सिंगरौली, सीधी, शहडोल, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, सागर और पांढुर्णा में तेज आंधी चलेगी।

3 अप्रैल: बैतूल में ओले गिर सकते हैं। खंडवा, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, ग्वालियर, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, डिंडोरी, छिंदवाड़ा, बालाघाट, पांढुर्णा में 40 से 50 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चलेगी। भोपाल, विदिशा, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, नर्मदापुरम, हरदा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, देवास, आगर-मालवा, दतिया, भिंड, मुरैना, श्योपुर, सिंगरौली, सीधी, कटनी, जबलपुर, नरसिंहपुर, सिवनी, मंडला, सागर, टीकमगढ़, निवाड़ी में 30 से 40 किमी की रफ्तार से आंधी चलेगी।

होटल में चल रहा था सेक्स रैकेट, पुलिस ने छापा मारा तो चादर से मुंह छिपाए बैठे रहे लड़के-लड़कियां

● होटल का मालिक युवतियों को देता था 1200 रुपये ● युवकों के पास से दवाएं भी मिली, पुलिस ने की जब्त

दतिया(नप्र)। सिविल लाइन में संचालित होटल ग्रेट गैलेक्सी में रविवार को कोतवाली पुलिस ने सैक्स रेकेट पकड़ा। कोतवाली पुलिस ने दबिश देकर वहां से तीन युवक और तीन युवतियों को पकड़ा है। पुलिस ने इस संबंध में होटल मालिक और उसके मैनेजर सहित पकड़े गए युवक और युवतियों पर मामला दर्ज किया है।

बता दें कि इस होटल में अनैतिक देह व्यापार को लेकर लगातार शिकायतें मिल रही थी। इन सूचनाओं के आधार पर पुलिस ने वहां दबिश दी और होटल मालिक की कारतूत सामने आ सकी। दबिश के दौरान पकड़े गए युवक शर्मिंदगी के चलते कमरे के चादर से मुंह ढांककर बाहर निकले। जिन्हें पकड़कर पुलिस कोतवाली लेकर आई।

कोतवाली टीआई धीरेंद्र मिश्रा ने बताया कि रविवार को पुलिस टीम के साथ पहुंचकर होटल ग्रेट गैलेक्सी में दबिश दी गई। होटल में अनैतिक कृत्यों के संबंध में जानकारी मिली थी। पुलिस ने होटल मैनेजर से वहां ठहरने वालों के बारे में जानकारी मांगी तो उसका कहना था कि होटल में कोई नहीं रुका है।

होटल रजिस्टर में युवकों के नाम दर्ज थे लेकिन युवतियों के बारे में एंट्री नहीं मिली। पुलिस ने जब होटल के कमरा नंबर 203, 204 और कमरा नंबर 103 खुलवाया तो वहां मौजूद में उक्त युवकों के पास से

दवाएं भी मिली हैं। जो पुलिस ने जब्त कर ली।

पकड़े गए जोड़ों में शामिल युवकों के नाम गोपाल जोशी पुत्र हरिमोहन निवासी बड़े पोस्ट ऑफिस के पास दतिया, विजय उपाध्याय पुत्र मनोज उपाध्याय निवासी रिछरा फाटक आयुर्वेद अस्पताल के पीछे दतिया व देव साहू पुत्र दशरथ निवासी न्यू गल्ला मंडी करैरा, जिला शिवपुरी बताए गए। वहीं तीनों युवतियां दतिया की हैं। दबिश में होटल संचालक राजा यादव दतिया और उसके मैनेजर कपिल रावत निवासी ठाकुरबाबा रोड डबरा, ग्वालियर सहित पकड़े गए।

होटल में करा रहे थे देह व्यापार- पुलिस पूछताछ में पकड़ी गई युवतियों ने बताया कि उन्हें देह व्यापार के लिए उक्त लड़के अपने साथ बाइक पर बैठाकर लाए थे। इसके बदले उन्हें होटल मालिक से एक हजार और बारह सौ रुपये मिलते थे। वहीं होटल मालिक भी वहां देह व्यापार कराने के लिए कमरा आसानी से उपलब्ध करा देता था। इस दौरान मैनेजर कपिल का कहना था कि होटल मालिक के आदेश से वह सिर्फ युवकों का ही नाम रजिस्टर में लिखता था, जबकि युवतियों के नाम दर्ज नहीं किए जाते थे। इस तरह देह व्यापार में मालिक और मैनेजर संलिप्त पाए गए। वहीं पकड़ी गई युवतियों के पास से मिले पर्स में महिला पुलिस कर्मी द्वारा ली गई तलाशी में नगदी और दो मोबाइल आदि बरामद किए।

संपादकीय

नेपाल : क्या राजशाही लौटेगी?

पड़ोसी देश नेपाल में तीन दिनों से जिस तरह राजशाही की वापसी को लेकर हिंसक प्रदर्शन हो रहे हैं, सरकार जिस तरीके से उसका दमन कर रही है, उससे वहां लोकतंत्र समाप्त हो न हो, लेकिन यह देश अस्थिरता के नए दौर में जरूर पहुंच रहा है। इसका फायदा चीन जैसे देश उठा सकते हैं और नेपाल से सांस्कृतिक धार्मिक रिश्ता रखने वाले भारत की सबसे बड़ी चिंता भी यही है। नेपाल में 2006 में पूर्व के राजा ज्ञानेन्द्र को हटाकर लोकतंत्र की स्थापना हुई। इसी के साथ वहां लगभग दो सौ साल से चला आ रहा राजा का शासन तो समाप्त हुआ ही, नेपाल को परंपरागत हिंदू राष्ट्र से धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में तब्दील कर दिया गया। इस सत्ता व व्यवस्था परिवर्तन में चीन समर्थक वामपंथी पार्टियों की बड़ी भूमिका थी, जो बरसों से राजा की सत्ता के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष करती आ रही थीं। नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना का उन सियासी पार्टियों ने भी समर्थन किया, जो गैर वामपंथी या मध्यमार्गी पार्टियां थीं। करीब ढाई करोड़ की आबादी वाले इस देश में कई राजनीतिक पार्टियां हैं। नेपाल का मुख्य धर्म हिंदू होने के बाद भी वहां का सामाजिक, राजनीतिक ढांचा ऐसा है कि कोई भी पार्टी पूर्ण बहुमत के सत्ता में नहीं आ सकी है। देश में अमूमन गठबंधन सरकारें सत्ता में रही हैं और कोई भी सरकार अपना कार्यकाल पूर्ण नहीं कर पाती है। ऐसे में निरंतर राजनीतिक जोड़ तोड़ नेपाल का स्थायी सियासी चरित्र बन गया है। वहां सत्ता के लिए कोई किसी से भी हाथ मिला लेता है तो कभी भी समर्थन वापस ले लेता है। राजनीतिक अस्थिरता नेपाल की सबसे बड़ी समस्या है। यह इस बात का भी उदाहरण है कि किसी भी देश में राजशाही से सीधे लोकतंत्र पर आना और उस हिसाब से देश का चरित्र ढालना हंसी खेल नहीं है। नेपाल को सीधे राजशाही से लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष देश बनाने की कोशिश मोटे तौर पर असफल ही रही है। अगर भारत से इसकी तुलना करें तो भारत में राजशाही खत्म होने के बाद 90 साल तक देश पर अंग्रेजों को शासन रहा, जिन्होंने धीरे-धीरे ही सही लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए बुनियाद तैयार की। लेकिन नेपाल में वैसा कुछ नहीं हुआ। यही कारण है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम होने के बाद भी देश को नया संविधान अपनाने में 9 साल लग गए। नेपाल एक गरीब और जमीन से घिरा हुआ देश है। वहां कई नस्लों के लोग रहते हैं। ज्यादातर आबादी तराई क्षेत्र में रहती है, जिसका भारत से रोटी- बेटी का सम्बन्ध रहा है। लेकिन नेपाल के अधिकांश राजनेताओं को यही रिश्ता खलता है और वो इसे नेपाल के अंदरूनी मामले में भारत का दखल मानकर चीन से रिश्ते बढ़ाकर इसे संतुलित करने की फिराक में रहता है। चीन नेपाल में दखल का कोई मौका नहीं छोड़ता, क्योंकि इससे भारत को अपने आप शह मिलती है। नेपाल लोकतंत्र स्थापित होने के बाद भी जनता की समस्याएं जस की तस हैं। बेरोजगार, चरमराती अर्थव्यवस्था, अशांति और नेताओं का आए दिन रंग बदलने से लोगों का विश्वास लोकतंत्र से उठता जा रहा है। यही कारण है कि लंबे समय से हाशिए पर रहे राजा ज्ञानेन्द्र ने इन हालात में अपनी संभावनाएं बूझी हैं। राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी राजशाही का झंडा बुलंद किए हुए है। दुर्गा प्रसाई और नवराज सुबेदी इस आंदोलन के अगुवा बन गए हैं। राजशाही समर्थकों के आंदोलन में दो लोग मारे गए हैं। सरकार की सख्ती के बाद भी आंदोलन का दायरा बढ़ता ही जा रहा है। जहां तक भारत की बात है तो वह नेपाल में ऐसी सरकार चाहेगा, जो भारत हितैषी हो फिर चाहे वो राजा हो या लोकतंत्र।

नेपाल में गणतंत्र के खिलाफ बगावत क्यों ?

नजरिया

आचार्य श्रीहरि

लेखक स्तंभकार हैं।

गणतंत्र सबसे सफल और सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है। गणतंत्र में गण की प्रधानता होती है। यानी कि जनता ही सर्वश्रेष्ठ होती है, निर्णायक होती है और भाग्यविधाता होती है। जनता की इच्छा गणतंत्र की प्राथमिकता होती है। लेकिन नेपाल में उल्टा हो रहा है। नेपाल में गणतंत्र के खिलाफ बगावत हो रहा है, विद्रोह हो रहा है, हिंसा हो रही है, सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि नेपाल को गृहयुद्ध में धकलने की कोशिश हो रही है। नेपाल की राजधानी काठमांडू में गणतंत्र के खिलाफ हिंसा हुई है और हिंसा में दो लोगों की मृत्यु हुई है, सैकड़ों लोग घायल हुए हैं। काठमांडू की सुरक्षा व्यवस्था चरमरा गयी। हिंसक तोडफोड में संपत्तियों का नुकसान हुआ है। गणतंत्र में बैठे लोग यह अंदाजा लगाने में असफल हुए कि उनके खिलाफ आंदोलन इतना हिंसक और भयावह होगा। जब शासक वर्ग अहंकारी होता है, जनाकांक्षी नहीं होता है, जनता की मनःस्थिति को पहचानने की शक्ति नहीं रखता है तो फिर ऐसी ही कठिन और हिंसक परिस्थितियां उत्पन्न होती है, भविष्य की राह कठिन होता है और तकरार से जुझना पडता है। गणतंत्र के नेतृत्वकर्ता दलों को अभी अहसास नहीं होगा कि उनके सामने भविष्य की चुनौतियां कितनी खतरनाक है, भयावह और हिंसक है? क्योंकि हिंसक बगावत का जनमत कोई काठमांडू तक सीमित नहीं है, बल्कि गांव-गांव तक पसर गया है। नेपाल के कोने-कोने से मांग उठ रही है कि नेपाल में जारी गणतंत्र को समाप्त किया जाये और नेपाल में राजतंत्र की स्थापना होनी चाहिए, राजतंत्र के साथ ही साथ हिन्दू राष्ट्र की स्थापना की भी मांग उठी है। नेपाल कभी राजतंत्र और हिन्दू संस्कृति की धरोहर हुआ करता था। दुनिया का इकलौता हिन्दू राष्ट्र था। चीन परस्त माओवादी हिंसा और आतंक के विस्तार से राजतंत्र की समाप्ति हुई थी। राजतंत्र हिन्दुत्व का प्रहरी होता था। राजतंत्र की समाप्ति के बाद हिन्दू प्राथमिकता का कवच भी समाप्त हो गया।

गणतंत्र के विरोधियों का दमन भी एक हिंसक प्रतिक्रिया है, हिंसक राजनीति है और मानवाधिकार का घोर हनन है। गणतंत्र विरोधियों का हिंसक और अमानवीय दमन से कई जटिल समस्याएं खडी होंगी और नेपाल की स्थिति विस्फोटक हो सकती है। राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर जेलों में डाल दिया गया है। राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी ही बगावत का नेतृत्व कर रही है। प्रजातंत्र पार्टी को राजतंत्र का समर्थक और आकांक्षी पार्टी माना जाता है। राजशाही के पतन के बाद राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी हाशिये पर चली गयी थी और अपना जनाधार खो दी थी। इनकी जगह कम्युनिस्ट पार्टियां ले ली थी। प्रजातंत्र पार्टी हाशिये पर जरूर बैठी हुई थी पर प्राणहीन नहीं हुई थी। अवसर की तलाश में थी। गनतंत्र को अलोकप्रिय होने का इतंजार कर रही थी। गणतंत्र की अभिलाषा के दौर में राजतंत्र समर्थक किसी पार्टी के लिए कोई अवसर की उम्मीद हो ही नहीं सकती है। करीब दो दशक तक प्रजातंत्र पार्टी को इतंजार करना पडा। इस दौरान माओवादी और कम्युनिस्ट पार्टियां सत्ता में आती-जाती रही हैं और अच्छा शासन देने की जगह भ्रष्टाचार और अपनावाद चलाकर नेपाल की जनता की कब्र खोदने जैसे ही कार्य किये। सत्ता की भागीदारी में जनता की भलाई होनी चाहिए, जनता की इच्छाओं का सम्मान होना चाहिए, विकास और प्रगति के मार्ग पर चलने के लिए होना चाहिए। पर पुष्प कुमार दहल और कोली जैसे कम्युनिस्ट शासकों ने जनता की इच्छाएं पूरी करने की जिम्मेदारी नहीं निभायी। राष्ट्रीय आंकाक्षा के विपरीत कार्य कर अलोकप्रियता को ही अपने सिर पर लादने जैसे कुकृत्य किये।

दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि नेपाल का गणतंत्र खिलने की जगह मुरझाने लगा, जवान होने के पहले ही दम तोड़ने लगा, जनता का बोझा बन गया, अलोकप्रियता और भ्रष्टचार का प्रतीक बन गया, बईमानी का बदबूदार उदाहरण बन गया। जबकि गणतंत्र की स्थापना की बहुत लंबी लडाइयां लडी गयी थी। कई दशकों तक हिंसक और अहिंसक आंदोलन चले थे। शांति प्रिय लोग जहां शांति से विरोध कर रहे थे वहीं हिंसक प्रबृति के लोगों ने हिंसा का खेल खेल रहे थे। खासकर माओवाद का आंदोलन काफी चर्चित था। माओवाद ने कई दशकों तक हिंसक आंदोलन चलाया, नेपाली सेना का नरसंहार किया, नेपाल के कमजोर नागरिकों का खून बहाया। फिर भी नेपाल में माओवाद और कम्युनिस्टवाद के लिए जगह नहीं थी। आम जनता कम्युनिस्ट वाद और माओवाद को अपना हितैषी मानने के लिए तैयार नहीं थे। राजतंत्र में उनकी आस्था थी, उनका विश्वास था। यही कारण था कि कम्युनिस्ट और माओवाद की हिंसा का भीषण दौर को भी झेल लिया था। जबतक राजा महेन्द्र जीवित थे, तबतक माओवादियों को कोई जगह नहीं बन रही थी और जनतंत्र की उम्मीद भी मजबूत नही हो रही थी। क्योंकि राजा महेन्द्र बहुत ही लोकप्रिय थे और जनाकांक्षी थे और स्वार्थ रहित शासक थे। लेकिन नेपाल के लिए दुर्भाग्य यह हुआ कि राजा महेन्द्र का दुखद अंत हो गया। साजिशन उनका और उनके वंश का हिंसक अंत हो गया। राजा महेन्द्र का दुखद अंत नहीं होता तो फिर राजतंत्र बना रहता और राजशाही जनता के लिए आकांक्षी भी बनी रहती। राजा महेन्द्र का संहार के कारण कम्युनिस्ट और माओवाद मजबूत हुए।

संस्कृति भंजक राजनीतिक प्रबृतियां जनाक्रोश को बढावा दे रहा है, जनतंत्र को अलोकप्रिय बना रहा है। जनतंत्र की कब्र खोद रहा है और राजतंत्र के लिए जगह बना रहा है। कोली जहां मार्क्सवादी हैं वहीं पुष्प कुमार दहल माओवादी हैं। ये दोनों की समझ है कि सत्ता बन्दूक की गोली से निकलती है। यह मंत्र पुराना हो चुका है। सत्ता बन्दूक की गोली से निकलती है को समझने और मानने वालों का अंत बहुत ही खतरनाक होता है। आधुनिक युग में इसका कोई स्थान नहीं है। सोवियत संघ ढह चुका है। चीन पूंजीवाद को अपने सिर पर लाद लिया है। जबकि वेनुजुएला जैसा देश अमेरिका का सहार करने और कम्युनिस्ट वाद का झंडा फहराने का सपना देखते-देखते दिवालिया हो गया, भूखे और नंगे होकर दुनिया के लिए बोझ बन गये। उत्तर कोरिया की जनता तानाशाही रवैये के कारण त्राहिमाम कर रही है। कम्युनिस्टों और माओवादियों ने नेपाल के हिन्दू संस्कृति का दमन करने और संहार करने के लिए कोई कसर नहीं छोडी। हिन्दू राष्ट्रवाद को दमन कर दिया गया, संहार कर दिया गया। जबकि नेपाल की जनता हिन्दुत्व के प्रति आस्था रखती थी। भारत के साथ सांस्कृतिक संबंध को भी संहार करने की पूरी कोशिश की गयी। चीन के बहकावे में आकर भारत विरोध की सभी हदें पार की गयी और चीन का गुलाम बनना स्वीकार कर लिया। चीन की गोद में जो भी बैठता है वह दिवालिया हो जाता है। इसका उदाहरण पाकिस्तान और श्रीलंका है। चीन मदद की बहुत बडी कीमत वसूल करता है। भारत मदद के साथ ही साथ बडे भाई के दायित्व का निर्वहन करता रहा है। फिर भी भारत विरोध के प्रति इनकी सक्रियता हिंसक और अस्वीकार जैसी रही है।

कैसा राजतंत्र इस पर बहस होनी चाहिए। राजतंत्र को प्रतीकात्मक ही होना चाहिए। ब्रिटेन का उदाहरण सामने है। ब्रिटेन में भी राजशाही है। राजा-रानी ही ब्रिटेन का प्रधान होता है। लेकिन जनता की चुनी हुई सरकार ही शासन करती है। इसके साथ ही साथ ब्रिटेन के राजा-रानी और सरकार अपनी पुरातन संस्कृति ईसाईयत के प्रति जिम्मेदार होते हैं, इनका संहार नही करते हैं, इस पर गर्व भी करते हैं। नेपाल के लोकतांत्रिक हस्ती रमन पांडेय कहते है कि राजतंत्र प्रतीकात्मक ही रहना चाहिए जबकि सत्ता हिन्दूवादी होनी चाहिए। राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक पार्टी भी कुछ ऐसा ही विचार प्रकट कर रही है। अगर कम्युनिस्टों का प्रतिनिधत्व करने वाला कोली और माओवादियों का प्रतिनिधित्व करने वाले दहल फिर भी हिंसक राजनीतिक प्रबृतियां पर सवार होकर गणतंत्र का कब्र खोदना बंद नहीं करेगे तो फिर प्रतीकात्मक ही सही पर राजतंत्र के प्रति जनता की आस्था को रोक नहीं सकते हैं।

आखिर सच तो सामने आना ही चाहिए !

तकनीक क्षमता

राजीव खंडेलवाल

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

14 तारीख की रात्रि को लगभग 11.30 दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के दिल्ली के लुटियंस इलाके में 30 तुगलक लेन स्थित अधिकारिक निज निवास के आउट हाउस के सुरक्षा गार्ड क्वार्टर के बाजू के कमरे में जज व पत्नी की अनुपस्थिति में आग लग जाती है। घर का कर्मचारी न्यायाधीश के निज सचिव को इसकी सूचना देता है। 11.43 को पीसीआर वैन कॉल की जाती है। फायर ब्रिगेड आग बुझा कर चली जाती है। पुलिस आती और चली जाती है। दिल्ली पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा 4.30 बजे दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से बातचीत कर वीडियो भेजने के साथ घटना की जानकारी देते हैं, जिसे मुख्य न्यायाधीश शाम को ही उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को प्रेषित कर देते हैं। वे तुरंत ही तत्पश्चात मुख्य न्यायाधीश दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को तीन बिंदुओं पर जस्टिस वर्मा का स्पष्टीकरण लेने को कहते हैं। स्पष्ट है, घटना का समाचार छपने के 24 घंटे के भीतर ही संबंधित लोगों को खबर होकर तंत्र सक्रिय हो जाता है, परंतु पुलिस तंत्र निष्क्रिय रहता है अथवा कर दिया जाता है?

सुबह 19 तारीख को दिल्ली के एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी अखबार में जस्टिस वर्मा के घर आग लगने की नोट जलने की जानकारी छपने से मीडिया सहित देश के राजनीतिक व न्यायिक क्षेत्र में आश्चर्य मिश्रित हाहाकार मच जाता है। न्यायपालिका की निष्पक्षता और ईमानदारी पर प्रश्नों की बाढ़ आ जाती है। जैसे ही 22 तारीख को सुबह उच्चतम न्यायालय साहसिक रूप से 'आग के वीडियो' के साथ उनके द्वारा की गई पूरी कार्रवाई को अधिकृत रूप से सार्वजनिक करता है, तब अखबार की उस न्यूज़ का महत्व समझ में आता है।

इस घटना के संबंध में पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई पुलिस प्रशासन की गंभीर लापरवाही व भूल को प्रदर्शित करती है। आश्चर्यजनक रूप से इस मामले में कोई 'एफआईआर दर्ज नहीं' होती। दिल्ली फायर सर्विस के डायरेक्टर का बयान आता है कि, घटना के समय कोई जले हुए नोट नहीं मिले, जबकि 500 की नोटों की 4-5 अधजली बोरियां मिलने की बात सामने आयी थी। परंतु कुछ समय बाद ही इस बयान का खंडन भी आ जाता है। जले नोटों की राशि के बाबत भी अलग-अलग आंकड़े आ रहे हैं, जिनका कोई आधार या सत्यापन नहीं है। इस तरह के मामलो में नोट मिलने पर आयकर व अन्य विभाग ईडी इत्यादि द्वारा कोई कार्रवाई न करना भी घटना की निष्पक्ष व प्रभावी जांच पर गंभीर प्रश्न लगता है। 'घटनास्थल' को आगे जांच के लिए सुरक्षित न रख पाना भी पुलिस प्रशासन की असफलता को ही दर्शाता है, क्योंकि अगले दिन सुबह ही नौकर ने घटनास्थल को साफ कर दिया था।

घटना का दूसरा पक्ष जो मीडिया के एक वर्ग में रिपोर्ट भी किया जा रहा है कि जस्टिस वर्मा को साजिश के तहत फंसाया गया। जस्टिस वर्मा की कार्यप्रणाली, कार्यक्षमता, जजमेंटस् या ईमानदारी के परसेप्शन पर प्रायः वकीलों ने कभी कोई आपत्ति नहीं की। हां घटना के तुरंत बाद मुख्य न्यायाधीश द्वारा जस्टिस वर्मा के दिल्ली से उनके मूल प्रदेश उत्तर प्रदेश स्थानांतरण की प्रस्तावित कार्रवाई एक ओर सीजेआई की संवेदनशीलता व गंभीरता को इंगित करती है, मुख्य न्यायाधीश के मामले के प्रति संवेदनशीलता व गंभीरता को इंगित करती है, तो वहीं दूसरी ओर इलाहाबाद उच्च न्यायालय के बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अनिल तिवारी ने कहा कि उत्तर प्रदेश कोई कचरा पेटी नहीं है, जहां किसी भी जज को भेज दे। तथापि उच्चतम न्यायालय ने कहा कि स्थानांतरण का प्रस्तावित करने की कार्रवाई का इस घटना से कोई संबंध नहीं है। जस्टिस वर्मा के 'वकील' से उत्तर प्रदेश हाई कोर्ट के 'जज' बनने के पहले उनके ऊपर एक सिंभावली शुगर मिल मिल्स के एक गैर कार्यकारी निदेशक के रूप में 'एफआईआर' होने का मामला जरूर सामने आया था, जिसे बाद में सीबीआई ने उनकी जज के रूप में नियुक्ति के बाद समाप्त कर दिया था। जस्टिस वर्मा ने आग की घटना में जले नोटों से उनके किसी भी तरह के संबंधों से पूरी तरह से इनकार करते हुए मीडिया पर उन्हें बदनाम करने का आरोप लगाया है।

पूरे मामले का समग्र अध्ययन करने से अभी तक के उपलब्ध साक्ष्य व परिस्थितियों के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि जस्टिस वर्मा के मामले के दोनो पहलू हैं। एक तरफ वो 'प्रथम दृष्ट्या दोषी' प्रतीत होते हैं, तो दूसरी तरफ वे किसी षड्यंत्र का शिकार होते भी प्रतीत होते हैं। उनके 'प्रथम दृष्ट्या दोषी' होने की स्थिति का उल्लेख स्वयं मुख्य न्यायाधीश ने आंतरिक जांच का आदेश देते समय किया है। मुख्य न्यायाधीश का ऐसा मानने का एक कारण आंतरिक जांच को उचित ठहराना भी हो सकता है। लेकिन जले, अधजले नोटों का जज के आधिकारिक निवास पर घटना के 9वें दिन भी बाहर पाया जाना और फिर सुबह घटनास्थल को साफ कर कथित रूप से साक्ष्य को मिटाया जाना, घटना के तुरंत बाद जस्टिस वर्मा का कोई इनकार न आना कई सवाल खड़े करता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात पुलिस द्वारा किसी भी प्रकार की कोई जब्ती न बनाना, न उसे मालखाने में जमा कराना जो कि ऐसे मामलों में आवश्यक होता है, घटना के समय जस्टिस वर्मा का बाहर रहना, वकीलों के बीच जस्टिस वर्मा की एक अच्छी रेपुटेशन होना, ये सब कारण उनकी निर्दोषता की ओर इशारा करते हैं। साथ ही इस घटना को लेकर कॉलेजियम व्यवस्था पर प्रश्न वाचक चिन्ह लग रहे हैं। शायद इसलिए कि देश के इतिहास में न्यायपालिका ने पहली बार अपनी आंतरिक कार्रवाई को सार्वजनिक किया। परंतु बड़ा प्रश्न यह है कि इस घटना की जानकारी देने का दायित्व क्या मुख्य न्यायाधीश का था अथवा पुलिस प्रशासन का? बहरहाल इसके लिए राम गोपाल वर्मा की सस्पेंस फिल्मों के अंतिम समय में आने वाले परिणाम 'हत्यारा कौन?' को याद कर कुछ समय तक प्रतीक्षा कीजिये!

मूर्खमेव जयते

व्यंग्य

पूरन सरमा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जमाना मूर्खों का है। मूर्खों की जय होती है तथा मूर्खों के माथे पर ही मुकुट बाँधे जा रह हैं। इस कारण मूर्खता बढ़ रहीं है तथा लोगों में मूर्ख बनने का चाव भी। बुद्धिमानों के साथ सदैव चोट हुई है। वे मूर्खों के सामने कभी नहीं टिक पाये हैं तथा हमेशा मुँह के बल गिरे हैं। मूर्खता के भाव बढ़े हैं तथा बुद्धिजीवियों के गिरे हैं। लोग एक-से-एक नायाब मूर्खतायें करके मूर्खता के पुराने कीर्तिमान तोड़ने में लगे हैं और निरन्तर साबित करने में लगे हैं कि उनसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं हो सकता। उस पर मजे की बात यह है कि वे अपने आपको मूर्ख नहीं समझते तथा चतुर-सुजान होने की बात सोचते हैं। उन्हें यह इलहाम ही नहीं होता कि उनकी क्रियायें सर्वथा मूर्खता के अनुकूल हैं। मेरे मोहल्ले में मैं अकेला सुजान हूं बाकी सब मूर्ख हैं। इस दृष्टि से मेरा कोई महत्त्व नहीं है वहाँ। मूर्खता का प्रतिशत ज्यादा होने से वे मुझे मूर्ख समझते हैं। अब मैं अपने को चतुर समझूँ तो इसका कोई अर्थ नहीं है, इसलिए भला इसी में है कि मैं भी अपने आपको मूर्ख ही समझ लूँ।

मूर्खता का चरम समय है। मूर्खता पीक पर है। इस समय थोड़ा-सा छेड़ दीजिये, सारे मूर्ख बर्र की तरह आ चिपकेंगे। भला इसी में है कि मूर्खों को बेवकूफबनायें। सामाजिक स्तर से लेकर राजनीतिक स्तर तक मूर्ख भाइयों की एकता काम कर रही है। राजनीति में तो एक से बढ़कर एक मूर्ख काम कर रहा है। जो लोग सरकार चलाते हैं, उन्हें मूर्ख चाहिए क्योंकि वे स्वयं मूर्खता के दायरे से घिरे पड़े हैं। राजनीति में तो जो मूर्खताएँ हुई हैं उनका अपना इतिहास है तथा वे चिरस्मरणीय हैं। वे कुछ भी कर लेतें हैं लेकिन मानते हैं कि वे राष्ट्र कल्याण कर रहे हैं। चुनाव में मूर्ख खड़े होते हैं और मूर्ख मतदाता उन्हें ही विजयश्री का हार पहनाता है। एक भी सुजान चुनाव में खड़ा होकर देख ले, यदि वह जीत जाये तो हमें बता देना, हम मान जायेंगे, जमानत तक नहीं बचा पायेगा। कई लोग भावुक हैं। राष्ट्रीयता से भरे जनकल्याण तथा व्यापक बदलाव के लिए जनक्रान्ति जैसा कोई सपना पाल लेते हैं और इसी से प्रेरित होकर चुनाव में खड़े भी हो जाते हैं, परन्तु जनाब हार जाते हैं। तब जाकर उनकी आँख खुलती है कि यथार्थ क्या है ? यथार्थ में यह होता है कि किसी को चतुराई पसंद ही नहीं है। पहले यह प्रचारित करवाइये कि आप निरे मूर्ख हैं, फिर देखिये आपका क्रेज, जनता मर मिटेगी आप पर। हर बार आप जीतते जायेंगे।

मुख्यमंत्री जब भी मंत्रिमण्डल बनाता है आले से आला मूर्ख खोजता है। वह जानता है कि मुझसे ज्यादा समझदार मंत्री बन गया तो सरकार को गिरा देगा। इसलिए वह अगले दल के विकट मूर्खों की सूची तैयार कर जन-कल्याण का दिवास्वप्न देखता है।

कहने का मतलब यह है कि मूर्खों के लिए राजनीति में 'स्कोप' खून है, बशर्ते कि आप में अपने मूर्खता को भुनाने की तरकीब हो। इसलिए राजनीतिज्ञों के लिए कोई शैक्षणिक योग्यता नहीं है हमारे यहाँ। यानि जो मंत्रीजी का निजी सचिव बने वह तो आई. ए. एस. होना चाहिए, परन्तु मंत्री के लिए अपने हस्ताक्षर करना आना भी अनिवार्य नहीं है। वह तो जन प्रतिनिधि होता है, जनता ऐसे ही प्रतिनिधि चुनती है जो निरक्षर हों। वैसे साक्षरता के लिए हमारे यहाँ काम हो रहा है, अरबों रूपया फूँका जा रहा है परन्तु निरक्षर-अनपढ़ों का प्रतिशत कम ही नहीं हो रहा। दिनों-दिन मूर्खों का 'क्रेज' बढ़ता ही जा रहा है।

कई बार लगता है काश हम भी मूर्ख होते ! लाख कोशिश की कि हमें भी जनता मूर्ख मान ले। लेकिन राजनीति इतनी प्रखर चलती है कि हमें यह दर्जा ही नहीं मिल पाता। मूर्ख होने का अपना आनंद और सुख है। आदमी तनाव तथा अपमान से बचा रहता है, क्योंकि जब उसे भले-बुरे का ज्ञान ही नहीं होगा तो अपनी मूर्खता से होने वाली हानियों से वह अप्रभावित ही रहेगा। मसलन किसी मूर्खता पर कोई सुजान हँसे और ऊपर से यह मूर्खता और कि मैं भी हँसने लगूँ तो इसमें अपमान का कड़ुवा घूँट कहाँ पीया, अपितु एक और मूर्खता का परिचय देकर मैंने दो कदम आगे की मूर्खता का प्रदर्शन किया। नजर फैलाकर देख लीजिये-दुःखी हैं तो आप, बाकी आपके चारों ओर फैले मूर्ख मौज उड़ा रहे हैं। आपसे अधिक पदोन्नति ले रहे हैं, वेतन ले रहे हैं तथा सुख-सुविधा से भौतिक जीवन का आनंद ले रहे हैं। पूरे अवसर ही मूर्खों को सुलभ करा दिये गये हैं, यहाँ तक कि कोटा ही निर्धारित कर दिया गया है। कई बार तो मुझे लगता है कि मूर्खता की पराकाष्ठा यही रही तो एक दिन शत-प्रतिशत मूर्ख सर्वत्र हो जायेंगे। जहाँ मूर्खों का निवास होता है, वहाँ लक्ष्मी का निवास होता है। क्योंकि सब जानते हैं स्वयं लक्ष्मी का वाहन भी उल्लू ही है। वह सदैव उल्लूओं पर कृपा करती हैं। सुजान व्यक्ति की यही कमजोरी है कि वह किसी का वाहन नहीं बनता। लोग उसकी सवारी (घोड़ी) नहीं बना सकते। परन्तु मूर्खों के साथ ऐसा नहीं है, उनकी घोड़ी कोई भी बना सकता है। वे इसके लिए तैयार भी रहते हैं। राजनीतिज्ञों की सवारी चमचे होते हैं, चमचे मूर्ख ही होते हैं। कोई मान-सम्मान या स्वाभिमान नाम की चीज तो उनके पास होती नहीं। ये तो एक तरह से खरीदे हुये गुलाम होते हैं जो 'यस सर-यस सर' की तोता रट लगाये 'रात को दिन, दिन को रात' बताते रहते हैं।

मूर्ख बनने का कोई प्रशिक्षण नहीं होता। मूर्ख दो प्रकार के होते हैं। एक तो जन्मजात मूर्ख। दूसरे मूर्खता का ढ़ोंग कर मूर्ख कहलवाने वाले मूर्ख। जन्मजात मूर्ख ज्यादा जीवंत होते हैं तथा इन पर प्रभु कृपा खूब होती है। मूर्खता का ढ़ोंग करने वाले बेवकूफ बने रहकर अवसर का लाभ उठाते रहे हैं।

इन्हें हम 'सुजान-मूर्ख' भी कह सकते हैं, ये इतने अवसरवादी होते हैं कि कोई मौका अपने लाभ के लिए चूक नहीं सकते हैं। ये जन्मजात मूर्खों को भी मूर्ख बनाकर लाभ हथिया लेते हैं। ये लोग मूर्खता विवशता में अपनाते हैं। जब चतुर-सुजानता में दाल नहीं गल पाती तो ये व्यवस्थागत अज्ञानता को ध्यान में रखकर मूर्खता को गले लगाकर अपनी जीविका जुटाते हैं। समझदार भूखा मर सकता है, परन्तु एक वज्र मूर्ख सदैव तृप्ति की डकारें लेता रहेगा। मूर्खों के लिए अवसर बढ़ रहे हैं तथा सभी क्षेत्र में इनके लिए आरक्षण-सा हो गया है। इसलिए सारे सत्त्व, इन्सानियत तथा मूल्यों को तिलांजलि देकर जन समाज मूर्खता को धड़ल्ले से अपना रहा है और नहीं लगता कि मूर्खों का भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा।

नयी सदी में मूर्खता हमारी पहचान बनती जा रही है, यह बड़ी बात है। हमारी मूर्खता की अपनी मौलिकता तथा इतिहास है, इसलिए इसे कोई खतरा भी नहीं है। उसने पाँव इतने मजबूती से जमा लिये हैं कि मुझे कोई अशुभ आशंका उसके लिए दिखाई नहीं देती। पढ़ाई-लिखाई कर लेने मात्र से मूर्खता समाप्त नहीं होती। हमारे यहाँ तो जो आनंद और आश्चर्य की बात है, वह यही है कि दिनों-दिन पढ़े-लिखे मूर्खों की संख्या बढ़ती जा रही है। मूर्खों के अपने संगठन हैं तथा निरन्तर वे अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जो समाज-राष्ट्र इस दिशा में अग्रसर है, नहीं लगता कि वह इसमें मात खा जायेगा। यह लेख भी मूर्खतावश ही लिखा जा रहा है, इसलिए आप मुझे सुजान समझने की मूर्खता न कर डालना। क्योंकि मैं तो आप ही की जमात में शामिल होने को लालायित हूँ। इसलिए मूर्ख-दिवस की पूर्व संध्या पर हम सब मिलकर एक ही नारा लगायें-'मुर्ख एकता जिंदाबाद, मूर्खमेव जयते।' सत्य है जहाँ मूर्ख होते हैं, वहीं लोकतंत्र भी मजबूत होता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अप्रैल फूल अर्थात् मामू बनाओ महोत्सव

व्यंग्य

विनोद कुमार विक्की

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अमूमन आम जन द्वारा कैलेंडर वर्ष में सभी विशेष दिवसों को हर्षोल्लास से मनाया जाता है, लेकिन अप्रैल माह का प्रथम दिन मनाने की बजाय बनाने का होता है। आपको बता दें, हमारा देश शिल्पकारों और निर्माताओं का देश है।

यहाँ का प्रत्येक नागरिक मनाने और बनाने में सिद्धहस्त होता है। संसार के अन्य स्थानों पर यूँ तो सिर्फ फर्स्ट अप्रैल के सुअवसर पर ही एक-दूसरे को मूर्ख बनाया जाता है या बनाने का अघोषित प्रावधान है, किंतु आर्यावर्त भूखंड पर फूल बनने और बनाने का परंपरागत महोत्सव किसी भी सीजन,किसी भी समय और किसी भी अवसर पर संपूर्ण विधि-विधान के साथ मनाया जाता है। इस पर्व में बनने वाले को मामू/गधा/फूल/अप्रैल फूल की संज्ञा दी जाती है, तो बनाने वाला स्याना/शाना/डेढ़ शाना के नाम से जाना जाता है।

इस भूखंड पर हर कोई एक-दूसरे को बनाने के लिए आतुर दिखाई देता है। दशकों से वोट की लालसा में लोक लुभावन वायदों से माननीय नेताजी जनता को मामू बनाते आ रहे हैं, जबकि महंगाई और बेरोज़गारी से प्रभावित आम जन मुफ़्त राशन, मुफ़्त पानी, मुफ्त बिजली की आस में खादी मानव की सरकार बनाती आ रही है।

एक ओर बॉस अथवा बड़े साहब अधीनस्थ कर्मचारियों को कार्यों के अतिरिक्त बोझ से गधा बनाने का प्रयास कर रहें है, तो दूसरी ओर काम नहीं करने अथवा कार्यों के ससमय निष्पादन से बचने के लिए चतुर कर्मचारी चाटुकारिता द्वारा बॉस/वरीय पदाधिकारियों को खुश करते हुए उनका हीमोग्लोबिन स्तर बढ़ा कर उन्हें ऐड़ा बनाने की जुगत में लगा हुआ है। सायबर अरेस्ट, हनी ट्रैप आदि के माध्यम से सायबर ठग लोगों को ठगी का शिकार बनाने में तल्लीन है। आन-लाइन गेम कंपनियां युवाओं को जुआरी-सह-खिलाड़ी बनाने में लगा हुआ है।पादरी,बाबा और मौलाना पापियों और पथभ्रष्ट भक्तों को अजब-गजब तकनीक से सात्विक और पवित्र बनाने में महती भूमिका निभा रहे है।

कोई ब्लॉग बना रहा है, तो कोई ठुमका लगा कर अथवा जीवन दांव पर लगा रील बना कर सोशल मीडिया पर फॉलोअर्स बना रहा है।

सरकारी बाबू कार्य नहीं करने के एवज में मासिक वेतन बना रहा है, तो कुछ सरकारी मुलाजिम सरकारी सेवा को चाय-पानी अर्थात् ऊपरी कमाई का साधन बना रहा है।

खरीद-फरोख्त की व्यवसायिक राजनीति के तहत राजनीतिक पार्टियां चुनाव से पहले टिकट बेचकर कस्टमर को अपना उम्मीदवार बनाते हैं, तो चुनाव पश्चात दूसरे पार्टी के कस्टमर स्वरूप विधायक अथवा सांसद को खरीद कर सरकार बना लेती है।

भारतीय भूमि पर बनना और बनाना एक सतत प्रक्रिया है। इस होड़ में प्रदेश के मुखिया रोजगार का साधन उपलब्ध नहीं करा सकने की स्थिति में प्रदेश के कामगारों को प्रवासी मजदूर और शिक्षित युवाओं को बेरोजगार बनाने में अतुलनीय योगदान दे रहे हैं। व्हाट्सएप्प विवि बिना प्रमाणिक तथ्यों वाले डाटा से सोशल मीडिया सेवी को कथित तौर पर विद्वान बना रहा है। साझा संकलन की आड़ में पैसे लेकर प्रकाशक अथवा कापी-पेस्ट में घोर आस्था रखने वाले संपादक साहित्यिक ज्ञान से पैदल व्यक्तियों को भी लेखक अथवा साहित्यकार बना रहे हैं।

बनने और बनाने के दौड़ तथा दौर में जनप्रतिनिधि अपनी अवैध संपत्ति बनाने में भिड़ा हुआ है, तो तथाकथित मासूम जनता रील और शार्ट वीडियो बनाने में लगी हुई है।

ऐसा नहीं है कि सिर्फ सबल, शिक्षित और अमीर व्यक्ति ही मनाने और बनाने में सक्षम हैं। हमारा देश लोकतांत्रिक व्यवस्था वाला राष्ट्र है। यहाँ गरीब से गरीब व्यक्ति भी अपने मत से अपनी जाति और बिरादरी का मुखिया, विधायक से लेकर सांसद बनाने का माद्दा रखता है।

कहने को तो इस भूखंड पर शासन की लोकप्रिय पद्धति लोकतंत्रात्मक है लेकिन अब्राहम लिंकन के 'लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा...' सिद्धांतों वाला नहीं अपितु शेक्सपियर के कथन 'प्रजातंत्र मूर्खो का शासन' वाला, क्योंकि वर्तमान लोकतंत्र का आधार जाति, क्षेत्र और धर्म की बुनियाद पर टिका हुआ है।

यहाँ के विवेक शील प्राणियों के सद्कृत्य एवं कारनामें ऐसे-ऐसे होते हैं कि जिसे देखकर प्राकृतिक मूर्ख भी शरमा जाए। मासूम जनता हो अथवा मोबाइल धारक मानव, वर्ष के 365 दिन छः घंटे तक सभी जन कुछ न कुछ मनाने अथवा कुछ न कुछ बनाने में लगा भिड़ा रहता है।

मजे की बात है कि विविधताओं से भरे हमारे देश में अप्रैल फूल बनने और बनाने के लिए अप्रैल माह का इंतजार नहीं करना पड़ता है, यहां स्थिति और परिस्थिति के अनुसार मामू बनाओ महोत्सव बारहमासी होता है। इस महोत्सव को जन से जननायक द्वारा सोद्देश्य मनाया भी जाता है।

चैत्र नवरात्रि : शरीर और आत्मा की शुद्धि का पर्व

चैत्र नवरात्रि विशेष

चेतनादित्य आलोक

वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार, स्तंभकार एवं राजनीतिक विश्लेषक

नवरात्रि हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसका आयोजन बड़ी ही भक्ति भाव के साथ एक उत्सव की तरह किया जाता है। यह शक्ति की पूजा के रूप में दुनिया भर में विख्यात है। यह समय विशेष रूप से आध्यात्मिक साधना के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। नवरात्रि का पर्व वर्ष में चार बार मनाया जाता है, जिनमें चैत्र नवरात्रि एवं शारदीय नवरात्रि को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। धार्मिक ग्रंथों में नवरात्रि को मां दुर्गा का विशेष आशीर्वाद पाने का अवसर बताया गया है। ऐसी मान्यता है कि जिनका सौभाग्य जागृत होता है, उन्हें ही माता रानी के व्रत, उपवास और पूजा-आराधना करने का सुख प्राप्त होता है।

चैत्र नवरात्रि का महत्व

धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो सनातन धर्म में चैत्र नवरात्रि पर्व का विशेष महत्व है, क्योंकि इसके प्रथम दिन माता आदिशक्ति का प्राकट्य हुआ था। बता दें कि माता आदिशक्ति ने ही ब्रह्मा जी को सृष्टि रचने का कार्य सौंपा था। चैत्र नवरात्रि के तीसरे दिन भगवान श्रीहरि विष्णु ने 'मत्स्य अवतार'धारण कर पृथ्वी को पुनः प्रतिष्ठापित किया था। इतना ही नहीं, त्रेता युग में भगवान श्रीहरि विष्णु चैत्र नवरात्रि के दौरान ही भगवान श्रीराम के रूप में अवतरित हुए थे। गौरतलब है कि इस बार चैत्र नवरात्रि की शुरुआत 30 मार्च रविवार को हो रही है,जबकि इसका समापन आगामी 06 अप्रैल रविवार को हो रहा है।

शरीर और आत्मा की शुद्धि का पर्व

चैत्र नवरात्रि की शुरुआत चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से होती है और समापन नवमी के दिन किया जाता है। यह नौ दिन मुख्य रूप से देवी के 9 रूपों की पूजा को समर्पित होता है। मान्यता है कि इस अवधि में सच्चे मन से पूर्ण भक्ति भाव के साथ माता रानी की उपासना करने वाले भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और जीवन में सुख-समृद्धि का आगमन होता है। साथ ही, घर, परिवार एवं करियर में भी शुभ परिणामों की प्राप्ति होती हैं। इतना ही नहीं, माता दुर्गा की पूजा-आराधना, प्रार्थना आदि करने से भक्तों को न केवल मानसिक शांति की प्राप्ति होती है, बल्कि इस व्रत के शुभ प्रभाव के कारण शरीर और आत्मा की शुद्धि भी होती है। इसलिए यदि संभव हो तो चैत्र नवरात्रि के शुभ अवसर पर माता रानी का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करना चाहिए तथा इसके लिए घर-परिवार के अन्य सदस्यों के साथ-साथ दूसरे लोगों को भी प्रेरित करना चाहिए।

रविवार का संयोग

इसे एक सुखद संयोग ही माना जा सकता है कि इस बार नवरात्रि का महत्वपूर्ण पर्व रविवार को आरंभ होकर रविवार को ही समाप्त भी हो रहा है। बता दें कि सनातन धर्म में रविवार का संबंध भगवानसूर्य नारायण से है, जिन्हें शक्ति, ऊर्जा और आत्मबल का प्रतीक माना जाता है। इसलिए नवरात्रि में रविवार का यह संयोग अत्यधिक शुभ माना जा रहा है। दरअसल, यह इस बात का संकेत है कि सूर्य भगवान की कृपा से इस अवधि में माता रानी की पूजा-आराधना, व्रत और साधना करने वाले भक्तों को शक्ति, ऊर्जा,आत्मबल, उन्नति और सफलता का विशेष आशीर्वाद मिलेगा।

कलश स्थापना मुहूर्त

कलश स्थापना नवरात्रि की पूजा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। बता दें कि नवरात्रि में न केवल पूजा, बल्कि कलश स्थापना भी विशेष शुभ मुहूर्त में ही करने का विधान है। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से माता दुर्गा प्रसन्न होती हैं और भक्तों को उनकी विशेष कृपा प्राप्त होती है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार, इस बार 30 मार्च को कलश स्थापना के लिएविशेष शुभ मुहूर्त प्रातः 06 बजकर 13 मिनट से लेकर 10 बजकर 22 मिनट तक है। इस अवधि में स्नान-ध्यानकर स्वच्छ वस्त्र पहनने के बादशुभ कलश की स्थापना करनी चाहिए। हालांकि अभिजीत मुहूर्त 12 बजकर 01 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 50 मिनट के मध्य भी कलश स्थापना करने का एक और शुभ संयोग बन रहा है।

यह नौ दिन मुख्य रूप से देवी के 9 रूपों की पूजा को समर्पित होता है। मान्यता है कि इस अवधि में सच्चे मन से पूर्ण भक्ति भाव के साथ माता रानी की उपासना करने वाले भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और जीवन में सुख-समृद्धि का आगमन होता है। साथ ही, घर, परिवार एवं करियर में भी शुभ परिणामों की प्राप्ति होती हैं। इतना ही नहीं, माता दुर्गा की पूजा-आराधना, प्रार्थना आदि करने से भक्तों को न केवल मानसिक शांति की प्राप्ति होती है, बल्कि इस व्रत के शुभ प्रभाव के कारण शरीर और आत्मा की शुद्धि भी होती है। इसलिए यदि संभव हो तो चैत्र नवरात्रि के शुभ अवसर पर माता रानी का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करना चाहिए तथा इसके लिए घर-परिवार के अन्य सदस्यों के साथ-साथ दूसरे लोगों को भी प्रेरित करना चाहिए।

कलश स्थापना से जुड़ा विधान

सनातन धर्म में किसी भी पूजा, यज्ञ या धार्मिक एवं आध्यात्मिक आयोजन में कलश स्थापना का बड़ा महत्व माना गया है। भारतवर्ष में कलश स्थापना की परंपरा चिर वैदिक काल से ही चली आ रही है। विशेष रूप से नवरात्रिपर्व के मामले में ऐसी मान्यता है कि कलश स्थापना के बाद हीइसकी शास्त्रीय शुरुआत होती है। दरअसल, सनातन धर्म में शुभ कलश के भीतर देवी-देवताओं का निवास माना गया है।कलश स्थापना सदैव शास्त्र-सम्मत विधि से और शुभ समय में ही करने का विधान है।शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसारऐसा करने से साधक को शुभ फल प्राप्त होता है। इसलिए इसका सदैव ध्यान रखना चाहिए। वहीं,सनातनी परंपराओं के अनुसार अमावस्या तिथि एवं रात के समय में कलश की स्थापना कदापि नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा करना अत्यंत अशुभ होता है।

हाथी पर सवार होकर आएंगी

गौरतलब है किसनातन धर्म में इस बात का अत्यंत विशेष महत्व होता है कि नवरात्रि के अवसर पर मां दुर्गा किस वाहन पर आरूढ़ होकर भक्तों से मिलने उन्हें आशीर्वाद देने आ रही हैं, क्योंकि माता केवाहन से ही इस बात का अनुमान लगाया जाता है कि भविष्य में मनुष्य, भारत एवं विश्व के लिए वक्त कैसा रहेगा। चैत्र नवरात्रि पर्व 2025 की एक विशेष बात यह भी है कि मां दुर्गा इस बार हाथी पर सवार होकर आ रही हैं, जिसेविशेष रूप से शुभ संकेत माना जा रहा है। दरअसल, भारतीय संस्कृति में हाथी को शांति, स्मृति एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। तात्पर्य यह किजब मां दुर्गा हाथी पर सवार होकर आती हैं, तो भक्तों के जीवन तथा देश और दुनिया में शांति की स्थापना होगी एवं समृद्धि का आगमन होगा।

क्या करें और क्या नहीं करें

चैत्र नवरात्रि पर्व के दौरान नियमित रूप से प्रतिदिन प्रातः उठना चाहिए। नित्यकर्मों से निवृत होने के बाद मां दुर्गा की विधि-विधान से पूजा-अर्चना, आराधना करनी चाहिए। नवरात्र में कन्या पूजन करकन्याओं को भोजन कराना चाहिए और उन्हें उपहार देने के बाद ही विदा करना चाहिए। इस दौरान प्रतिदिन मां का ध्यान करना लाभकारी होता है। पूजा के दौरान दुर्गा सप्तशती एवं दुर्गा चालीसा का पाठ करने सेभक्तों को संकटों से मुक्ति मिलती है।इस अवसर परपूर्ण भक्ति भाव के साथ एक लय में देवी कवच (अथ देव्याः कवचम्) का पाठ करने से भक्तों की मनोकामनाओं की पूर्ति होती है एवं माता रानी दुखों और संकटों से अपने भक्तों की सुरक्षा करती हैं। माता की मूर्ति अथवा तस्वीर के समक्ष घी का दीपक जलाना चाहिए। उनको कमल के फूल,शमी के पत्ते,लाल चुनरी एवं श्रृंगार की वस्तुएं अर्पित करनी चाहिए।वहीं,प्रसाद के रूप में मां दुर्गा को लौंग, बताशे, पूरी, खीर,चने की सब्जी, हलवा आदि अति प्रिय होने के कारण इन्हें ये वस्तुएं अर्पित करने से माता रानी की कृपा प्राप्त होती है।अंत में, पूजा का समापन आरती से ही करना चाहिए, जबकि व्रत का समापन योग्य ब्राह्मणों, निर्धनों तथा भूखे एवं जरूरतमंद लोगों को दान देकर करना चाहिए।

चैत्र नवरात्रि के मंत्र

इस अवसर पर मां दुर्गा को प्रसन्न करने एवं उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित मंत्रों का जाप करना चाहिए-

ओउम ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
ओउम दुं दुर्गायै नमः।
ओउम महालक्ष्मै नमः।
(इतिश्री)

'मूर्ख दिवस को मनाने की अनूठी परंपरा' - टेपा सम्मेलन

अंतरराष्ट्रीय मूर्ख दिवस

डॉ. हरीशकुमार सिंह

लेखक साहित्यकार हैं।

अंतरराष्ट्रीय मूर्ख दिवस को अपने-अपने अंदाज में मनाए जाने की परंपरा रही है तथा एक दूसरे को अप्रेल फूल बनाने का आनंद बच्चे तो उठाते ही हैं, बड़े भी इस दिन चुटकियाँ लेने से नहीं चूकते । साहित्यिक-सांस्कृतिक नगरी उज्जैन में अंतरराष्ट्रीय मूर्ख दिवस पर विगत 50 वर्षों से अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन का आयोजन हो रहा है । टेपा का मतलब होता है मालवा का भोलाभाला ग्रामीण आदमी जो निरीह भी होता है तथा उसे हर कोई अपना उल्लू सीधा करने के लिए मूर्ख बना जाता है तथा टेपा अपनी भलमनसाहत के कारण न चाहते हुए भी मात खा जाता है । टेपा का मतलब मूर्ख नहीं है बल्कि गुरू लोग उसे मूर्ख बना जाते हैं । मालवा की हास्य व्यंग्य संस्कृति से ओतप्रोत टेपा सम्मेलन में, तीन से चार घंटे तक श्रोता-दर्शक सिर्फ ठहाके लगाना चाहते हैं ।

टेपा रपट से आयोजन की शुरूआत

अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष प्रसिद्ध व्यंग्यकार (स्व.) डॉ. शिव शर्मा ने , समाजसेवी स्व. लाला अमरनाथ जी के साथ टेपा सम्मेलन की शुरूआत वर्ष 1970 में की और तब से लेकर आज यह आयोजन, राष्ट्रीय ख्याति का हास्य व्यंग्य का महत्वपूर्ण कार्यक्रम बन चुका है । मालवा की हास्य व्यंग्य संस्कृति को समर्पित टेपा सम्मेलन की शुरूआत आमंत्रित अतिथियों के सम्मान में गाये जाने वाले स्वागत गीत नृत्य से होती है जिसमें लोकनर्तक गालियों की मीठी बौछार करते हैं और अतिथि गाली पाकर भी मुस्कुराते नजर आते हैं । टेपा सम्मेलन का प्रमुख आकर्षक वार्षिक टेपा रपट होती है जो इस अवसर पर जारी की जाती है तथा टेपा रपट में वर्षभर की राष्ट्रीय घटनाओं की प्रस्तुति रोचकता के साथ की जाती है ।

प्रशस्तियाँ

टेपा रपट के बाद प्रारंभ होता है गुदगुदाने वाली प्रशस्तियों का दौर जिसमें आमंत्रित अतिथि को खड़ा कर उसके सम्मान में व्यंग्य से भरपूर सम्मान-पत्र का वाचन किया जाता है । टेपा मुकदमा भी चलाया जाता है जिसमें रोचक सवाल-जवाब होते हैं । टेपा सम्मेलन में जब एक बार एक विधायक से यह पूछा गया कि आप अपने विधानसभा क्षेत्र को अति महत्वपूर्ण क्यों मानते है तो उन्होंने जवाब दिया कि क्योंकि उनके क्षेत्र में प्रतिवर्ष गधों का मेला लगता है। रोचक शपथग्रहण समारोह भी करवाया जाता है तो टेपा सम्मेलन के आयोजन के बीच-बीच में टेपा संगीत और विज्ञापन भी लोटपोट कर देते हैं ।

टेपा सम्मान

विगत 50 वर्षों से हास्य-व्यंग्य का राधा-लाला अमरनाथ स्मृति टेपा सम्मान, राष्ट्रीय ख्याति के फिल्म कलाकार, हास्य-व्यंग्य के कवि, साहित्यकार को प्रदान किया जा रहा है। पिछले वर्षों में टेपा सम्मेलन में जो प्रसिद्ध फिल्म कलाकार टेपा सम्मान से सम्मानित हुए हैं उनमें श्री शैलेष लौढा, प्रेमचौपडा, राजेन्द्र नाथ, असित सेन, रजामुराद, शेखर सुमन, असरानी, राकेश बेदी, लक्ष्मीकान्तबेर्डे, टिक्कूतलसानिया, भगवान, मोहन चोटी, हिमानी शिवपुरी, ब्रिजेशहीरजी, सदानंद वर्मा आदि सम्मिलित हैं।

टेपा सम्मान 2025

52 वेंटेपा सम्मेलन में राधा लाला अमरनाथ स्मृति टेपा सम्मान प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय स्टेंडअप कॉमेडियन और हास्य अभिनेता एहसान कुरैशी को प्रदान किया जाएगा। टेपा सम्मेलन में पंडित सूर्यनारायण व्यास स्मृति टेपा सम्मान कवि गौरव शर्मा को , सांदीपनी न्यास टेपा सम्मान कवि श्री जानी बैरागी को , रंगकर्मी भगवती शर्मा स्मृति टेपा सम्मान कवयित्री जीनत एहसान को , स्व. रणछोड़सिंह आंजना स्मृति टेपा सम्मान कवि कुलदीप रंगीला को और स्व. किशनलाल जायसवाल स्मृति टेपा सम्मान प्रसिद्ध हास्य कवि अशोक भाटी को प्रदान किया जाएगा। टेपा सम्मलेन में मीडिया को प्रदान किये जाने वाले सम्मान के अंतर्गत पत्रकार मानसिंह बैस स्मृति राष्ट्रीय पत्रकारिता सम्मान ख्यात पत्रकार दीपक चौरसिया को, स्व. सत्यनारायण गोयल स्मृति सम्मान पत्रकार श्री बसंत शर्मा को। एडवोकेट ज्ञानस्वरूप श्रीवास्तव स्मृति सम्मान पत्रकार श्री जितेन्द्र सिंह चौहान को एवं स्व. कन्हैयालाल भूतड़ा स्मृति सम्मान फोटो जर्नलिस्ट श्री नीलेश राव खोयरे को प्रदान किया जा रहा है। टेपा सम्मेलन में गणेश चिन्तामण शास्त्री पंडा नाहरवाला स्मृति टेपा सम्मान नृत्य शिरोंमणि डॉ. हरिहरेश्वर पोद्दार को एवं स्व. आरक्षक आशा बैस स्मृति टेपा सम्मान सीएसपी सुश्री दीपिका शिंदे को प्रदान किया जा रहा है। कानूनविदस्व. बालकृष्ण उपाध्याय स्मृति टेपा सम्मान हास्य कवि सुनील निराला को प्रदान किया जा रहा है।

कांव-कांव सम्मेलन

टेपाटॉप कवि सम्मेलन में जो प्रसिद्ध कवि सम्मिलित हो रहे हैं उनमें एहसान कुरैशी [मुंबई], गौरव शर्मा [मुंबई], कवयित्री जीनत एहसान [मुंबई] , जानी बैरागी [राजोद], सुनील निराला [भिंड] , कुलदीप रंगीला [देवास] सम्मिलित हैं। टेपा रपट, प्रशस्ति वाचन, टेपाचिल्मीमुकदमें चलेंगे और अतिथियों को विचित्र वेशभूषा पहनाई जायेगी।

टेपा सम्मेलन के सूत्रधार प्रसिद्ध कवि श्री दिनेश दिग्गज एवं अशोक भाटी हैं।

टेपा सम्मेलन में देश की ख्यातनाम हस्तियाँ सम्मिलित होती रही है जिनमें स्व. काका हाथरसी, स्व. हरिशंकर परसाई, दुष्यंत कुमार, कमलेश्वर, बालकवि बैरागी, शैल चतुर्वेदी, सुरेन्द्र शर्मा, अशोक चक्रधर, माणिक वर्मा, मनोहरश्याम जोशी, डा. कन्हैयालाल नंदन, संपादक रमेशचन्द्र अग्रवाल, आलोक मेहता, जसपाल भट्टी, श्रीराम तिवारी ,निर्मला भुराड़िया, कार्टूनिस्ट देवेन्द्र, आदि सम्मिलित हैं। फिल्मी कलाकार भी टेपा सम्मेलन का आकर्षण होते हैं । पदम भूषण डॉ. (स्व.) सुमन टेपा के स्थाई अध्यक्ष और आशीवार्ददाता रहे। इस वर्ष का टेपा सम्मेलन , टेपा के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. शिव शर्मा की स्मृति को समर्पित रहेगा ।

कुल मिलाकर 1अप्रैल अंतरराष्ट्रीय मूर्ख दिवस की संध्या को उज्जैन में हास्य व्यंग्य का धूम-धड़ाका होता है जिसका नाम है टेपा सम्मेलन।

मूर्ख दिवस : मजाक से भरपूर एक ऐतिहासिक परंपरा

मूर्ख दिवस पर विशेष

श्वेता गोयल

(लेखिका डेढ़ दशक से शिक्षण क्षेत्र से जुड़ी हैं)

हर साल 1 अप्रैल को 'मूर्ख दिवस' मनाया जाता है। यह परंपरा कब और कैसे शुरू हुई, इसे लेकर अलग-अलग धारणाएं प्रचलित हैं लेकिन आमतौर पर माना जाता है कि अप्रैल फूल का चलन 16वीं सदी में फ्रांस में शुरू हुआ। कहा जाता है कि 1564 में फ्रांस के राजा चार्ल्स ने अपने देश में ग्रेगेरियन कैलेंडर लागू किया था, जिससे पहले नया साल 1 अप्रैल को मनाया जाता था। जब कैलेंडर बदला गया और 1 जनवरी को नववर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया, तब भी कई लोग पुरानी परंपरा से चिपके रहे और 1 अप्रैल को ही नए साल का उत्सव मनाते रहे। इस बदलाव को न अपनाने वालों का मजाक उड़ाया जाने लगा और उन्हें 'अप्रैल फूल' कहकर चिढ़ाया जाने लगा। धीरे-धीरे यह मजाक करने की परंपरा एक वार्षिक आयोजन में बदल गई, जिसे 'मूर्ख दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा।

कुछ लोगों का मानना है कि अप्रैल फूल का संबंध वसंत के आगमन से भी है। प्रकृति इस मौसम में अनिश्चित रूप से बदलती है, कभी तेज धूप तो कभी अचानक बारिश। ऐसे में यह मौसम मानो खुद ही लोगों को मूर्ख बनाता है। कई विद्वान मानते हैं कि 'मूर्ख दिवस' की जड़ें पगान उत्सवों में भी छिपी हो सकती हैं, जहां मौसमी बदलावों के दौरान विभिन्न तरह के हास्यास्पद और अजीबो-गरीब आयोजन किए जाते थे। यूरोप के कई देशों में ऐसे त्योहार प्रचलित थे, जहां लोग एक-दूसरे का मजाक उड़ाते और अजीब हरकतें करते थे। इटली में एक प्राचीन परंपरा के अनुसार, 1 अप्रैल को एक विशेष मनोरंजन उत्सव मनाया जाता था। उस दिन स्त्री-पुरुष सभी सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर नाचते-गाते थे, जमकर शराब पीते थे और हुड़दंग मचाते थे। यह दिन पूरी तरह से मौज-मस्ती और उल्लास से भरा होता था। मध्यकालीन यूरोप में भी इस दिन को लेकर कई रोचक प्रथाएं देखी गईं। स्कॉटलैंड में इसे 'अप्रैल गोक' कहा जाता था, जहां लोग एक-दूसरे को मूर्ख बनाने के लिए झूठी अफवाहें फैलाते थे और अजीबोगरीब हरकतें करते थे। यूनान में 'अप्रैल फूल' से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा प्रचलित है। कहा जाता है कि वहां एक व्यक्ति को अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत घमंड था और वह स्वयं को सबसे अधिक चतुर समझता था। उसके दोस्तों ने उसे सबक सिखाने के लिए यह अफवाह फैला दी कि एक निश्चित रात देवता पहाड़ की चोटी पर प्रकट होंगे और जो भी वहां होगा, उसे मनचाहा वरदान मिलेगा। वह व्यक्ति उस अफवाह पर विश्वास कर बैठा और पूरी रात वहां इंतजार करता रहा लेकिन जब कोई देवता नहीं आया तो वह निराश होकर लौटा। उसके दोस्त उसका मजाक उड़ाने लगे और कहा जाता है कि तभी से यूनान में अप्रैल फूल मनाने की परंपरा शुरू हो गई।

अंग्रेजी परंपरा में भी अप्रैल फूल का जिक्र मिलता है। इंग्लैंड में इस दिन को लेकर कई अनूठी कहानियां प्रचलित हैं। कहा जाता है कि 18वीं शताब्दी में यह प्रथा तेजी से फैली और आम लोगों में लोकप्रिय हो गई। इस दिन लोग एक-दूसरे को झूठे संदेश भेजते और फर्जी खबरें फैलाते थे। धीरे-धीरे यह परंपरा अन्य देशों में भी फैल गई और हर जगह इसे अपने अनूठे अंदाज में मनाया जाने लगा। 19वीं और 20वीं शताब्दी में यह परंपरा और भी विकसित हो गई। उस दौरान समाचार पत्र, रेडियो और बाद में टेलीविजन ने भी इस परंपरा को बढ़ावा दिया। प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों ने भी 1 अप्रैल को झूठी लेकिन मनोरंजक खबरें प्रकाशित करनी शुरू कर दी। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में एक बार बीबीसी ने यह खबर चलाई कि स्विट्जरलैंड में स्पेगेटी के पेड़ उगते हैं और लोग वहां से ताजा स्पेगेटी तोड़कर खाते हैं। उस खबर को देखकर कई लोगों ने सच मान लिया और बीबीसी से फोन करके यह पूछा कि वे अपने घर में ऐसे पेड़ कैसे उगा सकते हैं।

समय के साथ, अप्रैल फूल का जश्न दुनिया भर में अलग-अलग रूपों में मनाया जाने लगा। भारत में भी यह परंपरा धीरे-धीरे लोकप्रिय होती गई। पहले यह परंपरा सिर्फ अंग्रेजों और शहरी वर्ग तक सीमित थी लेकिन अब छोटे शहरों और गांवों तक भी इसका प्रभाव दिखने लगा है। बॉलीवुड और टेलीविजन ने भी इसे खूब बढ़ावा दिया है। कई फिल्मों और धारावाहिकों में अप्रैल फूल से जुड़ी घटनाओं को हास्यपूर्ण ढंग से दिखाया गया है। डिजिटल युग में इस परंपरा ने एक नया रूप ले लिया है। सोशल मीडिया के आगमन के साथ, अप्रैल फूल अब केवल व्यक्तिगत स्तर पर मजाक तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी फैल गया है। लोग झूठी लेकिन मजेदार खबरें फैलाकर अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को मूर्ख बनाने की कोशिश करते हैं। कई बार, बड़े-बड़े ब्रांड और कंपनियां भी इस अवसर का उपयोग अपने प्रचार के लिए करती हैं। वे फर्जी ऑफर और अनोखे विज्ञापन लेकर आते हैं, जिनका उद्देश्य सिर्फ लोगों को हंसाना होता है। हालांकि, इस मजाक की भी कुछ सीमाएं होती हैं। कई बार, कुछ मजाक इतने वास्तविक लगते हैं कि वे लोगों को परेशान कर सकते हैं। इसलिए, आजकल कई मीडिया हाउस और कंपनियां यह सुनिश्चित करती हैं कि उनके मजाक हानिरहित और सिर्फ मनोरंजन के लिए हों। अप्रैल फूल का एक गहरा संदेश भी है। यह दिन सिर्फ हंसी-मजाक का नहीं, बल्कि यह जीवन को हल्के-फुल्के ढंग से लेने की सीख भी देता है। यह हमें याद दिलाता है कि कभी-कभी जीवन में मजाक करना और हंसना भी जरूरी होता है। यह परंपरा हमें बताती है कि हर परिस्थिति में मुस्कुराना चाहिए और रिश्तों में मधुरता बनाए रखनी चाहिए। आज के समय में, जब जीवन तनाव और भागदौड़ से भरा हुआ है, अप्रैल फूल जैसा त्यौहार लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाने का काम करता है। यह दिन हमें यह सिखाता है कि थोड़ी-सी हंसी भी जीवन में बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है। 'मूर्ख दिवस' का एक उद्देश्य केवल हंसी-मजाक और मनोरंजन ही नहीं बल्कि यह लोगों को यह भी सिखाता है कि जीवन को हल्के-फुल्के ढंग से लेना चाहिए और हर परिस्थिति में मुस्कान बनाए रखनी चाहिए। इस दिन के बहाने लोग न केवल हंसते हैं बल्कि अपने रिश्तों को भी मजबूत करते हैं।

घायल हिरण को डायल 100 ने पहुंचाया अस्पताल

बैतूल। भैंसदेही थाना क्षेत्र में पुलिस की डायल 112/100 टीम ने एक घायल हिरण को समय पर उपचार दिलाकर उसकी जान बचाई। 28 मार्च की रात पिपरिया गांव के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से एक हिरण गंभीर रूप से घायल हो गया था। रात 8:24 बजे राज्य स्तरीय पुलिस कंट्रोल रूम डायल-100 भोपाल में इस संबंध में सूचना प्राप्त हुई। जानकारी मिलते ही भैंसदेही थाना क्षेत्र में तैनात डायल-100 वाहन तुरंत मौके पर रवाना किया गया। डायल-112/100 टीम में शामिल सैनिक सखाराम परते और पायलट गणेश चढ़ोकर मौके पर पहुंचे और घायल हिरण की हालत का जायजा लिया। टीम ने तत्परता दिखाते हुए घायल हिरण को तत्काल पशु चिकित्सालय पहुंचाया, जहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया।

रामचरितमानस जीवन को दिशा देने वाला ग्रंथ : गुरुसाहब शर्मा

बैतूल। भैंसदेही क्षेत्र के ग्राम बालनेर के सिद्ध हनुमान मंदिर कलश यात्रा के साथ राम कथा का शुभारंभ किया गया। कथा वाचक गुरु साहब शर्मा ने रामचरितमानस की महिमा बताई और सत्संग के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस जीवन को दिशा देने वाला

ग्रंथ है, जिसमें धर्म, भक्ति और नीति का अद्भुत संगम है। उन्होंने रामचरितमानस में वर्णित चार पवित्र घाटों प्रयागराज, चित्रकूट, काशी और अयोध्या का महत्व समझाया। प्रयागराज को ज्ञान और आत्मशुद्धि का प्रतीक, चित्रकूट को भक्ति और समर्पण का स्थान, काशी को वैराग्य और मोक्ष का द्वार और अयोध्या को धर्म और मर्यादा का प्रतीक बताया। इस पावन अवसर पर ग्राम के उपसरपंच नागोराव धोटे यजमान बने और उन्होंने बताया कि यह आयोजन लगभग तीन पीढ़ियों में पहली बार हो रहा है। ग्रामवासियों ने इस सफल आयोजन के लिए श्रद्धालुओं और सहयोगियों का आभार जताया। श्री राम कथा 5 अप्रैल तक चलेगी। ग्रामवासियों ने सभी श्रद्धालुओं से इस आयोजन में भाग लेने और पुण्य लाभ अर्जित करने की अपील की है।

यूपीएस स्कीम के खिलाफ आज काला दिवस मनाएंगे शिक्षक-कर्मचारी

बैतूल। मध्यप्रदेश में 1 अप्रैल 2025 को नेशनल मूवमेंट फॉर ओल्ड पेंशन स्कीम के राष्ट्रीय आह्वान पर काला दिवस मनाया जाएगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार बंधु और प्रांतीय अध्यक्ष परमानंद डेहरिया के नेतृत्व में शिक्षक, कर्मचारी और अधिकारी अपने कर्तव्य स्थल पर काली पट्टी बांधकर विरोध दर्ज कराएंगे। शाम 4 बजे सभी जिलों में कलेक्टर के माध्यम से प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा जाएगा। ज्ञापन में प्रथम नियुक्ति दिनांक से सेवा अवधि की गणना कर ग्रेज्युटी प्रदान करने और पुरानी पेंशन बहाल करने की मांग की जाएगी। इसके साथ ही स्थानीय समस्याओं को लेकर भी जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा जाएगा। पुरानी पेंशन बहाली आंदोलन बैतूल के जिलाध्यक्ष रवि सरनेकर ने बताया कि केंद्र सरकार ने 24 जनवरी 2025 को यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने का नोटिफिकेशन जारी किया था, जिसे 1 अप्रैल 2025 से केंद्रीय शिक्षकों, कर्मचारियों और अधिकारियों पर लागू किया जाएगा। पीएफआरडीए ने इसका मेमोरेंडम भी जारी कर दिया है। यूपीएस स्कीम को नेशनल पेंशन स्कीम (एनपीएस) से भी अधिक नुकसानदायक बताया जा रहा है। आर्थिक विशेषज्ञों ने इस स्कीम को कर्मचारियों के लिए अहितकारी करार दिया है। यह योजना शेयर बाजार आधारित है, जिसमें निवेश की गई राशि की कोई गारंटी नहीं है।

विवेकानंद वार्ड मुलताई का युवक 8 दिन से लापता

बैतूल। मुलताई के विवेकानंद वार्ड निवासी मनोहर पिता लक्ष्मीचंद साहू उम्र 25 वर्ष बीते शनिवार 22 मार्च से लापता है। सीसीटीवी फुटेज में उसे एक अनजान युवक के साथ जाते हुए देखा गया था, लेकिन आठ दिन बीत जाने के बावजूद अब तक उसका कोई सुराग नहीं लग पाया है। परिजन और समाज के लोग लगातार उसकी तलाश में जुटे हुए हैं, लेकिन पुलिस जांच में अब तक कोई ठोस प्रगति नहीं हुई है। थाना मुलताई में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद पुलिस द्वारा कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाने से साहू समाज में आक्रोश है। समाज के लोगों ने पुलिस अधीक्षक के नाम तहसीलदार मुलताई अनामिका सिंह को ज्ञापन सौंपकर जल्द से जल्द युवक को खोजने और मामले की गहराई से जांच करने की मांग की है। समाज के लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि प्रशासन अगले आठ दिनों में ठोस कार्रवाई नहीं करता है तो वे मजबूरन सड़क पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। ज्ञापन सौंपने वालों में नितेश साहू, गणेश साहू, कृष्णा साहू, रामदास साहू, पवन साहू, योगेश मोहन साहू, राजेश साहू, नगेंद्र साहू, शेषराव साहू, रवि साहू, बबलू साहू समेत समाज के अनेक सदस्य शामिल थे।

झरने का पानी घरों तक पहुंचाकर लोग कमा रहे रोजीरोटी, लोगों का मानना है इस पानी से ठीक होता है पाचनतंत्र

अवधारणा : बाबा मठारदेव की पहाड़ी से बहने वाले झरने के पानी कई बीमारियां होती हैं ठीक

बैतूल/सारणी। बाबा मठारदेव की पहाड़ी से कल-कल करता झरना लोगों के लिए कई बीमारियों के उपचार का साधन बना हुआ है। यहां के लोगों की यह अवधारणा है कि इस झरने के पानी का सेवन करने से कई प्रकार के रोग ठीक होते है। यहीं वजह है कि बाबा मठारदेव की पहाड़ी से गिरते हुए इस जल को लाने के लिए सुबह-शाम सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंचते है। इस पानी का सेवन करने वाले इस पानी को अमृत तुल्य मानते है। शहर के अशोक मालवीय और सुधीर लोखंडे ने बताया कि वह 25 वर्षों से यह पानी पी रहे है। बाबा मठारदेव की पहाड़ी पर जो जड़ी-बूटी और पेड़-पौधे है, उनकी जड़ों से इस पानी का रिसाव होकर आता है। इस पानी के सेवन से पेट में गैस, लीवर, पाचनतंत्र ठीक रहता है। इसके अलावा भी कई रोग ठीक हो जाते है। लोगों का मानना है कि बाबा मठारदेव की पहाड़ी पर कुछ ऐसे पेड़ है, जो जड़ी बूटी के काम आते है। उन पेड़ो की जड़ से पानी होता हुआ नीचे पहुंचता है। जिस कारण यह का पानी औषधि पूर्ण हो जाता है। श्याम चौहान के पुत्र ने बताया कि परिवार के सभी सदस्य लगभग 35-40 साल से यहां का पानी पी रहे है और उनका स्वास्थ्य भी बेहतर रहता है। यहीं वजह है कि झरने के पास सुबह-शाम बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ लगी रहती है।

10-12 किमी दूर से भी पानी लेने आते है लोग- इस पानी के महत्व की वजह से ही लोग 10 से 12 किमी दूर से पानी लेने के लिए पहुंचते है। कोई 5 लीटर, तो कोई 15 लीटर की कुप्पियों में पानी भरकर ले जाते है। यहां रोजाना ले जाने

वाले विश्वनाथ दत्त मिश्रा ने बताया कि यह पानी अमृत से काम नहीं है। मैं रोजाना यह पानी अपने परिवार के लिए लेने आता हूं। यहां पानी पहाड़ पर बीच में एक कुंड टाइप का प्राकृतिक बना हुआ है। जिसमें से इस पानी का रिसाव होते हुए यहां आता है। इस पानी को महीना भी रख लिया जाए तो इसमें चिकनाहट और काई नहीं जमती है। गुलाबराव पांसे से बताया कि मैं 2005 से यह पानी पी रहा हूं। यह पानी नगर पालिका और सतपुड़ा डैम के पानी से लाख गुना अच्छा है।

एक साल बाद भी खराब नहीं होता है पानी- गुलाबराव पांसे से बताया कि इस पानी को एक बाल्टी में भरकर, और जो पानी नगर में सप्लाई हो रहा है, दोनों पानी में बेहद अंतर है। नलों में सप्लाई पानी में 2-3 दिन में चिकनाई और कीटाणु उत्पन हो जाते है, जबकि झरने के पानी को लंबे समय तक रखने के बाद भी कुछ नहीं होता है। इन्होंने बताया कि एक बार झरने के पानी की बोतल भरकर रख दी थी, उसे 1 साल बाद देख, तो पानी को कुछ भी नहीं हुआ है। न ही कोई चिकनाई आई है और न ही इसमें से कोई दुर्गंध आ रही थी। कोई काई भी नहीं लगी।

इस पानी को बेचकर लोग कमा रहे रोजीरोटी- कुछ लोग जड़ी बूटीयुक्त पानी को रात में 15 लीटर की कुप्पी में भरकर सुबह सतपुड़ा ताप विद्युत गृह के अधिकारी और कर्मचारियों के घर तक पहुंचाया जाता है। अन्य नगरवासियों के घर तक भी पहुंचाया जाता है। जिससे उन्हें 20-25 रु तक की प्रतिदिन एक घर से आमदनी हो जाती है। इस पानी को नगर के कई घरों तक दिनभर पहुंचने का काम कुछ लोग करते है। गर्मियों के दिनों में जड़ी-बूटीयुक्त पानी भरने का यहां सिलसिला रात भर चलता है। लोगों ने बताया कि पहाड़ी से जल रिसाव होकर तीन जगह से जल की धारा नीचे आ रही है। नगरवासी इस जल को पीकर कई बीमारियों से छुटकारा पा रहे है।

आने-जाने वालों को होती है परेशानी- इस स्थल के विकसित करने नगरपालिका, सतपुड़ा ताप विद्युत गृह और वन विभाग द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कई सालों से यह स्थान जस का तस है। यहां आने के लिए पहाड़ पर चढऩा पड़ता है जो कि बहुत पथरीली है। यहां पर पहले पेड़ और पहाड़ में बांस लगाकर पानी भरा जाता था। अब लोगों द्वारा पत्थर का टिया बनाकर पाईप लगा दिया है। लेकिन उसे भी चोर निकाल के ले जाते है। नगर के लोगों का कहना है कि नगरपालिका द्वारा इस स्थान को विकसित करने की योजना बनानी चाहिए, ताकि लोगों को इस जल का लाभ मिल सके।

क्या कहते हैं नागरिक

(1) मुझे गैस और एसिडिटी की समस्या थी, फिर मैने जड़ी-बूटी युक्त झरने का पानी पीना शुरू किया। कुछ समय में मेरी गैस और एसिडिटी की समस्या खत्म हो गई। लगभग मैं 20 वर्षों से यह पानी पी रहा हूं। मैं आज 65 साल का हो गया हूं। मुझे कोई रोग नहीं है। यह पानी पीने से मैं स्वस्थ हूं।

- अमरीश सिंह रघुवंशी, नागरिक

(2) आजकल की जीवन शैली स्ट्रेस पूर्ण हो चुकी है। लोगों का खानपान भी सही नहीं है। जिससे शरीर में अनेकों रोग उत्पन्न हो रहे हैं। यह जड़ी-बूटी युक्त झडऩे का पानी से लोग अपना स्वास्थ्य ठीक रख सकते है। गैस और एसिडिटी की समस्या में बहुत जल्दी आराम मिलता है। सभी को यह जड़ी-बूटी युक्त पानी पीना चाहिए।

- अशोक कुमार मालवीया, नागरिक

इनका कहना है

इसमें हम कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि यह फॉरेस्ट में आता है। अगर हम कुछ करने का सोचे भी तो फॉरेस्ट परमिशन नहीं देगा।

- सीके मेश्राम,
सीएमओ, नगरपालिका सारणी।

मैं पता करवाता हूं और जो भी संभव हो सकता है योजना बनाकर विकास कार्य करवाया जायेगा।

- अजय बहाने,
एसडीओ, वन विभाग सारणी

मां शारदा समिति ने शक्ति स्वरूपा नारियों का किया सम्मान

बैतूल। नवरात्रि नारी शक्ति के आदर और सम्मान का पर्व है। यह महिलाओं को उनके स्वाभिमान और शक्ति का एहसास कराता है और समाज को नारी शक्ति को सम्मान देने की प्रेरणा देता है। हमारे धर्म ग्रंथों में नारी को देवी स्वरूप मानकर उसकी पूजा की गई है और कहा गया है

कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है। इसी विचार को साकार करते हुए बैतूल जिले की मां शारदा सहायता समिति ने उन महिलाओं को सम्मानित करने का बीड़ा उठाया है, जिन्होंने जिले का नाम रोशन किया है। सोमवार को बैतूल निवासी डॉक्टर स्वर्णा पिता राजू गुप्ता एमएस महिला बांझपन एवं बंध्यत्व निवारण विशेषज्ञ तथा उनके पति डॉक्टर विपुल गुप्ता को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि डॉक्टर विपुल टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल मुंबई में कैंसर सर्जन हैं। इसी क्रम में डॉक्टर नंदिनी हिरानी पिता धीरज हिरानी का उनके घर जाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर मां शारदा सहायता समिति की अध्यक्ष पिंकी भाटिया, कार्यकारी अध्यक्ष हिमांशु सोनी, शैलेंद्र बिहारिया, निमिष मालवीय, दीप मालवीय, संस्था के संरक्षक मुकेश गुप्ता और धीरज हिरानी उपस्थित रहे। इस मौके पर समिति के सदस्यों ने कहा कि नवरात्रि के पावन अवसर पर इन देवी स्वरूपा बेटियों का सम्मान करना सौभाग्य की बात है। यह पहल आगे भी जारी रहेगी ताकि नारी शक्ति को उचित सम्मान मिल सके और समाज में उनकी भूमिका को सराहा जाए।

हनुमानडोल में धूमधाम से मनेगा हनुमान जन्मोत्सव

हवन के बाद होगा भंडारा प्रसादी

बैतूल। सतपुड़ा के घने जंगलों में स्थित हनुमानडोल में विराजमान चमत्कारी हनुमान मंदिर में 12 अप्रैल को हनुमान जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर हवन-पूजन के उपरांत विशाल भंडारा प्रसादी का आयोजन होगा। श्री हनुमान डोल वेलफेयर समिति के अध्यक्ष राहुल चिंटू शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि पंडित शैलेश गुबरेले के निवास पर समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं समाजसेवी मुकेश खंडेलवाल की अध्यक्षता में हनुमान जन्मोत्सव धूमधाम मनाए जाने को लेकर एक बैठक हुई। समिति उपाध्यक्ष ब्रज किशोर टीटू पांडे एवं कोषाध्यक्ष राज सिंह पिंटू परिहार ने बताया कि सुबह सात बजे से नौ बजे तक अभिषेक,हवन-पूजन होगा। हवन में पूर्णाहूति के उपरांत सुबह 10 बजे से विशाल भंडारा प्रसादी का आयोजन होगा। समिति के सचिव अमरीश सोनू शर्मा ने बताया कि समिति के वरिष्ठ सदस्य मुकेश खंडेलवाल की पहल पर इस बार भी हनुमान जन्मोत्सव पर कमानी गेट के पास बस स्टॉप से प्रातः 11 बजे निःशुल्क बस हनुमान डोल के लिए रवाना होगी। बस हनुमान भक्तो को वापस बैतूल लेकर आएगी। यह सिलसिला शाम छह बजे तक चलते रहेगा।

प्लास्टिक से बनी सामग्री के उपयोग पर लगा प्रतिबंध

समिति के मनोज कोकाश एवं रिंकू किलेदार ने बताया बैठक में तय किया गया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हनुमानडोल मंदिर परिसर में विभिन्न अवसरों पर संस्थाओं के अलावा व्यक्तिगत तौर पर होने वाले भंडारा आदि आयोजन में सिंगल यूस प्लास्टिक सामग्री के उपयोग पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। उन्होंने यहां आने वाले श्रद्धालुओं से लिए निर्णय पर अमल कर सहयोग देने की अपील की। बैठक के अंत में श्री हनुमान डोल वेलफेयर समिति के अध्यक्ष राहुल चिंटू शर्मा ने आभार जताया। बैठक में धर्मेंद्र गोठी,अनिल सिंह ठाकुर, शैलेश गुबरेले, डॉक्टर नितिन देशमुख, रिंकू किलेदार, मनोज कोकाश,असीम चौधरी, अजय दुबे, सीताराम झल्लारे,मंदिर पुजारी विजेंद्र द्विवेदी आदि मौजूद थे।

आठनेर में अवैध सागौन परिवहन करते पकड़ी गई बाइक, आरोपी फरार

बैतूल। दक्षिण बैतूल वनमंडल के अंतर्गत आठनेर वन परिक्षेत्र में वनमंडलाधिकारी दक्षिण विजयानन्तम टी.आर. के मार्गदर्शन और वन परिक्षेत्र अधिकारी आठनेर (सा.) नितिन पवांर के निर्देशन में रात्रि गश्ती के दौरान ग्राम बेलकुंड में अवैध सागौन परिवहन का मामला सामने आया। वन विभाग की टीम ने हिरो होंडा सी.डी. 100 मोटरसाईकल पर 0.138 घनमीटर अवैध सागौन लकड़ी के 6 नग परिवहन करते हुए जब्त किए। जब्त की गई सागौन लकड़ी का अनुमानित मूल्य 8400 रुपये आंका गया है। वन विभाग की कार्रवाई के दौरान आरोपी अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गया। मामले में अज्ञात आरोपी के खिलाफ मध्यप्रदेश वनोपज व्यापार विनिमय अधिनियम 1969 की धारा 5 (1) के तहत वन अपराध प्रकरण पंजीबद्ध किया गया है। फिलहाल इस मामले की जांच जारी है। इस कार्रवाई में परिक्षेत्र सहायक हिरादेही मंगल सिंह सिकरवार,

वनरक्षक झिरी सुरेन्द्र पवार, वाहन चालक नूर मोहम्मद, सुरक्षा श्रमिक बिसन और सुभाष की विशेष भूमिका रही। वन विभाग की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई से अवैध सागौन परिवहन को रोका जा सका। जांच में जुटी टीम आरोपी की पहचान करने में लगी है। विभाग ने अवैध वनोपज परिवहन पर सख्ती बरतने का संदेश दिया है।

ईदगाह में नमाजियों को ठंडा पानी और बच्चों को क्रीम रोल बांटे

आवाज दो, हम जिंदा हैं ग्रुप ने फिर निभाया इंसानियत का फर्ज

बैतूल। ईद उल फितर के मौके पर समाज सेवा का एक और खूबसूरत उदाहरण देखने को मिला जब आवाज दो, हम जिंदा हैं ग्रुप के सदस्यों ने ईदगाह में नमाज के बाद सभी नमाजियों के लिए ठंडे पानी की व्यवस्था की। गर्मी के इस मौसम में ठंडा पानी पीकर सभी नमाजियों ने इस पहल की सराहना की। खासतौर पर छोटे बच्चों के लिए इस ग्रुप ने क्रीम रोल का इंतजाम भी किया, जिससे बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे। यह कोई पहली बार नहीं है जब इस ग्रुप ने समाज सेवा का ऐसा बेहतरीन उदाहरण पेश किया हो। रमजान के पूरे महीने में ग्रुप के सदस्य रोज़े रखने वालों के लिए निःशुल्क सेहरी की व्यवस्था भी कर रहे थे। इसके लिए ग्रुप के सदस्यों ने पूरी रात जागकर खाना बनाया और शहर के अलग-अलग हिस्सों में जाकर रोज़ेदारों तक सेहरी पहुंचाई। आवाज दो, हम जिंदा हैं ग्रुप की पहचान बैतूल जिले में सबसे अधिक ब्लड डोनेट करने वाले संगठन के रूप में भी है। जब भी किसी मरीज को खून की जरूरत होती है, इस ग्रुप के सदस्य तुरंत आगे आते हैं और मदद पहुंचाते हैं। यह ग्रुप स्वास्थ्य सेवाओं सहित सामाजिक और धार्मिक अवसरों पर भी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा है।

ईद के मौके पर ईदगाह में पानी वितरण के इस नेक कार्य की पूरे शहर में तारीफ हो रही है। इस पहल ने इंसानियत और सामुदायिक सौहार्द्र का मजबूत संदेश दिया है। जब पूरा शहर ईद की खुशियों में डूबा था, तब इस ग्रुप के सदस्य लोगों की सेवा में लगे हुए थे। यह साबित करता है कि सेवा की भावना किसी धर्म या मजहब से नहीं बंधी होती, बल्कि यह इंसानियत की सबसे बड़ी पहचान है। समाज सेवा के प्रति इस जज़्बे और समर्पण को देखते हुए आवाज दो, हम जिंदा हैं ग्रुप की हर ओर प्रशंसा हो रही है। चाहे रमजान हो, ईद हो या कोई और सामाजिक कार्य, यह ग्रुप हर बार इंसानियत की मिसाल पेश करता है।

बैतूल में एमपी ट्रांसको के कर्मियों ने सीखी जीवन रक्षक तकनीक

सीपीआर एवं जीवन रक्षक तकनीकों पर कार्यशाला आयोजित

बैतूल। मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी एम.पी. ट्रांसको व स्थानीय जिला चिकित्सालयों, मेडिकल कॉलेजों के सहयोग से मध्य प्रदेश में एमपी ट्रांसको के कर्मियों के लिए सीपीआर एवं अन्य ऐसे ही जीवन रक्षक तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इसी क्रम में एक प्रशिक्षण कार्यशाला एमपी ट्रांसको एवं जिला चिकित्सालय बैतूल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई। जिला चिकित्सालय में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यशाला में संयोजक सहायक अभियंता शिवकुमार और संजय पवार द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य एवं विषय की उपयोगिता पर प्रकाश डालते

हुए कंपनी प्रबंधन की मंशा से अवगत कराया गया। कार्यशाला में कंपनी के बैतूल स्थित सब स्टेशनों एवं अति उच्च दाब संधारण बैतूल के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों को मेडिकल ऑफिसर डॉ. रानू वर्मा द्वारा व्यवहारिक और उपयोगी प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में एमपी ट्रांसको के करीब 30 मेंटेनेंस, ऑपरेटिंग एवं सुरक्षा कर्मियों ने हिस्सा लिया। सीपीआर प्रशिक्षण के लिए उपयोग किए जाने वाले मानव पुतले एवं कुछ वीडियो की सहायता से सीपीआर तकनीक का विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि प्रत्येक प्रतिभागी ने विषय विशेषज्ञ की निगरानी में मानव पुतले पर सीपीआर तकनीक का अभ्यास किया एवं प्राथमिक उपचार संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पैग़ाम

डॉ. संतोष पटेल

हम भाषाई गुलाम हैं...

ह में आजादी मिली जरूर है पर साथ में भाषाई गुलामी भी मिली। जिस तरह से हमारी भाषाओं का दमन कर एक भाषा को ओढ़ा दिया गया उसी इंपोजिशन का विरोध तमिलनाडु भी आज कर रहा है।

बेशक राष्ट्रीयता का दंभ भरने वाले लोग तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन को भला बुरा कहें लेकिन सच झूठ नहीं हो जाएगा। उनका कहना गलत नहीं कि भोजपुरी और अन्य भाषाओं को हिंदी ने उसके क्षेत्र से ही क्षेत्र निकाला दे दिया। दमित कर दिया। उसको सप्रेस कर दिया। क्या गलत कहा उन्होंने?

आज़ादी के बाद से और अब तक भोजपुरी क्षेत्र के नेताओं को यह समझ नहीं आई। चुनाव के समय सिम्बोलिक रूप से भोजपुरी का खूब प्रयोग करते हैं पर जब उसके हक की बात हो तो मुंह में दही जम जाता है कारण एक ही उसके अंदर भाषाई अस्मिता की कमी।

स्टालिन को बोलने से पहले बिहार के मुख्यमंत्री हों या उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री वे इस बात का ज़बाब देंगे कि भोजपुरी इन राजयों की दूसरी राजभाषा अब तक क्यों नहीं बनाई गई? क्यों नहीं अकादमिक रूप से उसको बढ़ाया गया? उसकी अकादमियां आज जर्जर हाल में क्यों हैं या बनी ही नहीं तब जब गाहे बगाहे यूपी सरकार उसको बनाने की बात करती है? कई सवाल एक साथ उठ खड़े होते हैं?

राष्ट्रीयता के नाम पर आखिर कब तक यह भाषाई गुलामी झेली जाए? महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने बहुत कोशिश की कि हमारी आंखे खुले, हम नींद से उठे और 1947 में एक साथ दो प्रांतीय भोजपुरी सम्मेलन करा कर सबको यह संदेश दिया कि संविधान सभा में भाषाओं पर बहस हो रही है तो भोजपुरी को उचित स्थान मिले। प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने खुला विरोध किया।उनका मानना था कि भोजपुरी गीत गंवनई तक ठीक है आठवीं अनुसूची में नहीं आनी चाहिए। भोजपुरी की यह हालत और कोई नहीं हमारे भाग्य विधाता लोगों ने की है। बुरा लगता है पर सच कहना पड़ता है।

बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने भाषाई राज्यों के मुद्दे पर अपने विचार अपनी पुस्तक "Thoughts on Linguistic States" (1955) में व्यक्त किए। बाबासाहेब का मानना था कि भाषा लोगों की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है। उन्होंने तर्क दिया कि भाषाई समूहों को अपनी भाषा और संस्कृति के विकास के लिए उचित अवसर मिलना चाहिए। इसलिए, भाषा के आधार पर राज्यों का गठन एक स्वाभाविक और लोकतांत्रिक कदम हो सकता है। लेकिन भोजपुरी भाषा के क्षेत्रों के जनप्रतिनिधियों को ना तब होश था ना अब। इस क्षेत्र को अब भी गोबर पट्टी बना रखा है। बेरोजगारी, अशिक्षा, सामंतवाद और अब तो घोर रेडिकल इस क्षेत्र के भाषा और संस्कृति पर भयानक हमला हो रहा है। भोजपुरी भाषा को अश्लीलता का पर्याय बना देने का कुत्सित प्रयास कहीं ना कहीं भाषाई गुलामी के कारण है। वहां भाषाई अस्मितावाद को समाप्त ही कर दिया गया नतीजतन भोजपुरी भाषा और संस्कृति को दोयम दर्जे को घोषित कर दिया जाता है।

एक ऐसी भाषा जिसकी तुलना फ्रांस की एक्सियन भाषा से की जा सकती है जिसमें हाशिए के समाज का आर्टिजन गुण है, किसानों का ज्ञान है तो पर्यावरण को संरक्षित करने की प्रेरणा है। जो समाज उगते सूरज के साथ साथ डूबते सूरज को भी पूजता है मसलन निर्बल को भी सम्मान देता रहा है जिस मिट्टी में बुद्ध और महावीर के कदम पड़े हो। जहां कबीर और रैदास हुए, जहां गांधी महात्मा बने और जहां माता सीता को अंतिम आश्रय मिला। जहां अंग्रेजों को सबसे अधिक विरोध सहना पड़ा और बलिया से आरा तक पहले ही अपने को आज़ाद घोषित कर दिए उस क्षेत्र की भाषा आज राष्ट्रीयता के उन्माद में कहां दबी पड़ी है। आज उस भाषा के राज्य उसको उचित अधिकार से क्यों वंचित रखे हुए हैं? प्रो गणेश देवी की बात तभी तो सच लगती है कि दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषा भोजपुरी अपने राज्य में मान्यता के लिए तरस रही है फिर कैसे होगा उसका संवर्धन??

परिणामतः हम आज भी भाषाई गुलाम है...।

खजुराहो में बेटे ने पिता को पीट-पीटकर मार डाला

मर्डर कर बोला- इसका खून पीना है, गांववालों ने कहा- गर्मी में मानसिक हालत बिगड़ जाती है

खजुराहो (नप्र)। खजुराहो में एक युवक ने हनुमान मंदिर में रखी गदा से पीट-पीटकर अपने पिता की हत्या कर दी। उसने चचेरे भाई पर भी हमला किया, जिसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना भरवा गांव की सोमवार सुबह करीब 5::30 बजे की है। इसका एक वीडियो भी सामने आया है। आरोपी युवक मानसिक रूप से विक्षिप्त बताया जा रहा है। वीडियो में आरोपी बेटा रामपाल (30) के दोनों हाथ बंधे हुए दिख रहे हैं। पास में उसके पिता मनकू पाल (55) की लाश पड़ी है। वीडियो में आरोपी वह जोर-जोर से अपने पिता का खून पीने की बात कर रहा है। वीडियो में डायल 100 की गाड़ी और कुछ ग्रामीण भी दिख रहे हैं। उसने अपने चचेरे भाई महेश पाल (25) पर भी हमला किया था।

दादा के नाम वाली जमीन भी चाहता था आरोपी- पूरा झगड़ा पुश्तैनी जमीन का है। ग्रामीणों का कहना है कि रामपाल की दिमागी हालत ठीक नहीं है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ने लगती है। कई सालों से उसका इलाज भी चल रहा है। रामपाल के तीन भाई हैं। जमीन बंटवारे को लेकर उसका आए दिन पिता से विवाद होता था। वो चाहता था कि उसके दादा के नाम की जमीन भी उसे मिले।

मंदिर से गदा उठाया और पिता को पीटने लगा- प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि इसी बात को लेकर दादा, पिता और बेटे में सोमवार सुबह भी विवाद हुआ। इसी बीच आरोपी पास के ही मंदिर गया और वहां से गदा उठाकर ले लाया। उसने पिता मनकू पाल पर गदा से वार करना शुरू कर दिया। बेदम पिटाई से पिता की मौके पर ही मौत हो गई।

वीडियो सामने आया, आरोपी बोला- बच्चे भूखे हैं- हत्या के बाद घटनास्थल का एक वीडियो भी सामने आया है। जिसमें आरोपी रामपाल रस्सी से बंधा है, उसके पास ही पिता मनकू पाल का शव पड़ा हुआ है। पास ही पुलिस की डायल-100 गाड़ी खड़ी हुई है। कुछ ग्रामीण भी नजर आ रहे हैं। आरोपी रामपाल बड़बड़ाते हुए रो रहा है- इसने अभी एक लात मारी है। देखो यहां एक डंडा भी मार दिया है। देखो मैंने अपने पिता का खून पीया था। हमारे बच्चे बेचारे भूखे रो रहे हैं, भूखे हैं हमारे बच्चे, उषा, अनन्या। पूरा बताते हैं हम आपको, 40 हजार का तो संसार में मोबाइल चलेगा अब, पैसा इतना रहेगा, डरना नहीं हैं हमें तो। देखो इतनी हालत में कैसे हैं। खजुराहो एसडीओपी नवीन दुबे ने बताया कि आरोपी रामपाल को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है। मृतक मनकू के परिजन सुरेंद्र पाल ने पुलिस को घटना की जानकारी दी।

सुबह रस्सी काटकर भागा, मंदिर से उठा लाया गदा- धवाड़ पंचायत के सरपंच दिलीप पाठक ने बताया कि आरोपी रामपाल की बीते 20 से दिमागी हालत ठीक नहीं थी। ग्वालियर में उसका इलाज चल रहा था। दो बार उसके ब्रेन का ऑपरेशन भी हो चुका है। कई बार यह गांव के अन्य लोगों पर भी हमला कर चुका है। 2 दिन से इसकी दिमागी हालत ज्यादा खराब हो गई, तो इसे परिवारवालों ने बांधकर रखा था। ये रस्सी काटकर सुबह भाग गया। उसने पहले नहाया और मंदिर से हनुमान जी की गदा उठाकर घटना को अंजाम दे दिया।

आईएफएस अधिकारी निधि तिवारी को पीएम मोदी का निज सचिव नियुक्त किया गया

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी की रहने वाली आईएफएस अधिकारी निधि तिवारी को पीएम नरेंद्र मोदी का प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त किया गया है। डिपार्टमेंट ऑफ पर्सनल एंड ट्रेनिंग ने इस नियुक्ति की सूचना जारी की। निजी सचिव के तौर पर निधि तिवारी पीएम मोदी के कार्यक्रमों का समन्वयन, बैठकों का आयोजन और सरकारी विभागों के साथ संपर्क से संबंधित कामकाज देखेंगी।

पीएमओ में पहले भी कई महिला अधिकारियों को अहम जिम्मेदारी दी गई है। वहीं निधि तिवारी को प्रधानमंत्री की निजी सचिव के रूप में पदोन्नत करने का एक संदेश महिला सशक्तीकरण को लेकर भी है।

निधि तिवारी 2014 बैच की भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) अधिकारी हैं। वह नवंबर 2022 से प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में डिप्टी सेक्रेटरी के पद पर कार्यरत थीं। इससे पहले, उन्होंने विदेश मंत्रालय के डिस-आर्मामेंट एंड इंटरनेशनल सिक्योरिटी अफेयर्स डिवीजन में अंडर सेक्रेटरी के रूप में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। इससे भी पहले वह विदेश मंत्रालय में निरस्त्रीकरण और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मामलों के प्रभाग में अवर सचिव थीं।

सामाजिक समरसता व नागरिक कर्तव्यों के साथ राष्ट्र निर्माण का कार्य करें कार्यकर्ता : शिवप्रकाश

भाजपा का हर कार्यकर्ता तीन दिन तक गांव चलो-बस्ती चलो अभियान के तहत सेवा कार्य करेंगे : विष्णुदत्त शर्मा

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने सोमवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में बैठक को संबोधित किया। पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में कार्यकर्ता सामाजिक समरसता व नागरिक कर्तव्यों के साथ राष्ट्र निर्माण का कार्य करें। पार्टी कार्यकर्ता सुचिता के साथ संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाएं और पार्टी गतिविधियों को संपन्न करें। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ने विकास की कई योजनाएं चलाई हैं, जिन्हें पार्टी कार्यकर्ता जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें। प्रदेश के हर जिलों में विकास समितियों का गठन किया जाएगा और समितियों के पास आये सुझावों पर सरकार अमल करेगी। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी 6 अप्रैल को प्रदेश के सभी 65 हजार 14 बूथों पर प्राथमिक सदस्यों का सम्मेलन आयोजित कर पार्टी का स्थापना दिवस मनाएगी। 7 से 12 अप्रैल तक गांव चलो बस्ती चलो अभियान में कार्यकर्ता तीन दिन

प्रदेश के हर जिले में विकास समितियों का गठन होगा, सुझावों पर सरकार अमल करेगी : डॉ. मोहन यादव

तक प्रतिदिन आठ घंटे गांव व बस्ती में सेवा कार्यों में सहभागिता करेंगे। 14 अप्रैल को प्रदेशभर में डॉ. अंबेडकर जी की जयंती मनाई जाएगी। पार्टी के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपने कार्यों से दुनियाभर में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में चांद पर तिरंगा फहराया। आप सभी पार्टी कार्यकर्ता भाजपा की रीढ़ की हड्डी इसलिए जनता की सेवा के साथ पार्टी के कार्यों को आगे बढ़ाएं। प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने कहा कि पार्टी पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी का शताब्दी वर्ष समारोह मना रही है। इसके लिए पार्टी कार्यकर्ता अटलजी के पत्र, फोटो आदि का संग्रह करें और स्मृतियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की 'मन की बात' कार्यक्रम सुनें और मंडल समितियों में महिलाओं की भागदारी बढ़ाकर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दें।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के साथ समाज को सशक्त बनाकर उसे आगे ले जाने का कार्य कर रहे हैं। आप सभी भाजपा कार्यकर्ता राष्ट्र प्रथम के भाव के साथ देश और समाज की सेवा का कार्य कर रहे हैं।

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सभी प्रतिभागियों को विक्रम संवत 2082 की शुभकामनाएं दीं और संवत्सर की गणना पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे सभी पर्व व्रत-उपासना के लिए होते हैं, जबकि सभी त्योहार खुशियां मनाने के लिए होते हैं। बीते 20 सालों में भाजपा की सरकारों ने महाराज विक्रमादित्य की स्मृतियों को संजोने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि जिला स्तर पर जो भी अच्छे कार्यक्रम हों, उनमें पुलिस बैंड की सेवाएं लें। प्रदेश सरकार ने प्रत्येक जिले में विकास समितियों के गठन का निर्णय लिया है, जो विकास को लेकर अपने सुझाव और अनुशंसा देंगी। प्रदेश सरकार ने 30 मार्च से अगले तीन महीनों के लिए जल गंगा संरक्षण अभियान शुरू किया है। इस अभियान के अंतर्गत जल स्त्रोतों की सफाई, उनका जीर्णोद्धार किया जाएगा। इसके अलावा वाटर रिचार्ज के काम भी किए जाएंगे। पार्टी कार्यकर्ता इन कार्यक्रमों में भाग लें। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने विकास की अनेक योजनाएं लागू की हैं, पार्टी कार्यकर्ता विकास के इस संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं।

जबलपुर में धर्मांतरण की शंका पर बस रोकी,थाने ले गए

हिंदूवादी संगठन बोले- क्रिश्चियन हैं तो आईडी बताएं; टीआई बोले-जबरदस्ती धर्मांतरण की बात नहीं

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने एक यात्री बस को रोक कर रांझी थाने पहुंच गए। संगठन के कार्यकर्ताओं का आरोप है कि बस में मंडला के महाराजपुर से लाए आदिवासी लोग मिले है, जिन्हें धर्म परिवर्तन करवाने के लिए चोरी-छिपे यहां लाया गया था।

बस को भंवरताल पार्क पर रोका गया था, हालांकि हिंदूवादी संगठनों के पहुंचने पर बस का चालक फरार हो गया, जिसे पीछा करते हुए रांझी में पकड़ा गया। पुलिस ने सभी लोगों को अभिरक्षा में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

यात्री बोले- हम लोग अपनी मर्जी से आए- बस में सवार एक युवती ने बताया कि हम लोग तो बस से तीर्थ यात्रा पर आए थे और चर्च जा रहे थे। तभी कुछ अंकलों ने हमें रोका और बाद में पुलिस स्टेशन ले आए। वे कह रहे हैं कि हम लोगों को बहकाया जा रहा है। लेकिन हम अपनी मर्जी से यहां आए हैं। बस का किराया भी हमने ही दिया है। हमने 500-500 रुपए दिए हैं। हमें बस चर्च लेकर जा रही थी। हमने खुद तय किया था कि हम यहां आएंगे।

इस मामले में विश्व हिंदु परिषद के सदस्य संजय तिवारी ने कहा कि अगर ये लोग क्रिश्चियन हैं, तो आईडी में भी यही दर्ज होना चाहिए। लेकिन आईडी में आदिवासी लिखा है। हमें सुबह 8:30 बजे सूचना मिली, जिसके बाद हमारे कार्यकर्ता मौके पर पहुंचे। वहां दो बसें थीं, जिनमें से एक बस निकल गई।

यात्रियों से मिलने आए लोगों से थाने में मारपीट

हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने बस यात्रियों से मिलने आए दो लोगों के साथ थाने में ही मारपीट कर दी। कार्यकर्ताओं का आरोप है कि यह लोग आदिवासी लोगों का मन डायवर्ट करते हुए उन्हें धर्मांतरण के लिए दबाव बना रहे थे। इस दौरान हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं की पुलिस से भी जमकर बहस हुई।

जबरदस्ती धर्मांतरण की बात नहीं, चर्चों के भ्रमण पर निकले थे लोग

मामले में थाना प्रभारी मानस द्विवेदी ने बताया कि विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के द्वारा इस बस थाने लाया गया था, जिसमें क्रिश्चियन समाज के लोग बैठे थे। उनकी संख्या लगभग 50 थी। वे सभी महाराजपुर, मंडला के निवासी थे और वहीं के चर्च से संबंधित है।

ये लोग ईस्टर त्योहार से पहले अलग-अलग चर्चों के भ्रमण और तीर्थ यात्रा के उद्देश्य से रवाना हुए थे। उन्हें भंवरताल गार्डन के पास स्थित चर्च और रांझी स्थित चर्च का भ्रमण कर सदर होते हुए वापस जाना था।

इस बीच, संगठनों द्वारा धर्मांतरण संदेह व्यक्त किया गया, जिसके चलते पूछताछ की जा रही है। हम मंडला की टीम से भी संपर्क में हैं।

अहमदाबाद-बरौनी एक्सप्रेस ट्रेन में आग

इटारसी के पास सवा घंटे खड़ी रही, आग वाली बोगी को अलग कर रवाना की गाड़ी

नर्मदापुरम (नप्र)। मध्यप्रदेश के नर्मदापुरम जिले में इटारसी के पास चलती ट्रेन की बोगी में आग लग गई। ये घटना सोमवार दोपहर करीब 4 बजे इटारसी और बानापुरा के बीच में खुटवासा रेलवे स्टेशन के पास की बताई जा रही है। घटना अहमदाबाद-बरौनी एक्सप्रेस में हुई है। अहमदाबाद से चलकर बरौनी जाने वाली ये ट्रेन दोपहर करीब 2 बजे खंडवा से इटारसी की ओर रवाना हुई थी। धरमकुंडी स्टेशन निकलने के बाद खंबा नंबर 724/12 के पास ट्रेन गार्ड ने धुआं निकलते देखा। जिसके बाद ट्रेन को अचानक रोका गया। ट्रेन के रुकने और आग की सूचना से यात्रियों में हड़कंप मच गया। आग लगने के बाद ट्रेन करीब सवा घंटे तक खड़ी रखी। बाद में आग वाले कोच को अलग कर ट्रेन को रवाना कर दिया गया।

जनरेटर और पार्सल बोगी में आग लगी

ट्रेन के सबसे आखिरी में जनरेटर और पार्सल बोगी में आग लगी। यह बोगी स्टील के बर्तन के कार्टूनों से भरी थी। इस कारण आग के साथ काफी धुआं उठने लगा। जिसके बाद जनरेटर कोच में काम करने वाले कर्मचारी भी तुरंत बाहर निकले। सूचना के बाद दमकल को बुलाया गया। डोलरिया थाना पुलिस और आरपीएफ इटारसी से बल मौके पर पहुंचा।

यात्रियों में मचा हड़कंप, ट्रेन से नीचे उतरे

ट्रेन में आग लगने की घटना के बाद यात्रियों में हड़कंप मच गया। ट्रेन के रुकते ही यात्री नीचे उतर गए।

डिंडोरी में मधुमक्खी के काटने से 1 की मौत

8 साल के बच्चे समेत 11 लोग अस्पताल में भर्ती, खेत में भोजन बनाते समय किया हमला

डिंडौरी (नप्र)। डिंडोरी जिले के शहपुरा थाना क्षेत्र के बिलगांव में मधुमक्खियों के हमले में एक मजदूर की मौत हो गई। साथ ही 11 अन्य लोग घायल हो गए। घटना सोमवार दोपहर की है।जानकारी के अनुसार मोहन साहू के खेत में गेहूं की फसल काटने के लिए करीब 15 मजदूर आए थे। खेत के पास जामुन के पेड़ों पर मधुमक्खियों के छत्ते लगे थे। मजदूर पेड़ के नीचे खाना पका रहे थे। खाना पकाने से निकले धुएं की वजह से मधुमक्खियां भड़क गईं और उन्होंने हमला कर दिया। थाना प्रभारी अनुराग जामदार के मुताबिक, मधुमक्खियों के काटने से 55 वर्षीय मजदूर फगुआ की इलाज के दौरान मौत हो गई। घायलों में पदम धूमकेती, सहबू परस्ते, सुदामा धुर्वे, भगनी बाई, चमरी बाई, अमर, मनुआ सैयाम, गोलू, नीरज, गंगू और 8 वर्षीय हीरोटिन बाई शामिल हैं। सभी घायलों को शहपुरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। अस्पताल के डॉक्टरों के अनुसार इलाज के बाद सभी घायलों की हालत स्थिर है। सभी मजदूर आसपास के गांवों के रहने वाले हैं।

धीरेंद्र शास्त्री बोले- एक आंटी ने शादी का प्रस्ताव दिया

छतरपुर (नप्र)। बागेश्वर धाम के पीठाधीश पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने एक न्यूज चैनल पर अपनी शादी की योजनाओं पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि वे शादी करेंगे। उन्हें ऐसा जीवनसाथी चाहिए जो उन्हें और उनके परिवार को समझ सके। शास्त्री ने कहा कि उन्हें वाइफ नहीं, अर्धांगिनी चाहिए। उन्होंने शादी के कुछ प्रपोजल के किस्से भी साझा किए। इस दौरान बताया कि 40-42 साल की एक महिला ने तो अपने पति को तलाक देकर उनसे शादी का प्रस्ताव रखा था।

पूजा-व्रत रखने का हवाला देते हुए शादी की मांग की- एक और चौंकाने वाली घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि एक महिला भक्त ने तीन साल से पूजा और व्रत रखने का हवाला देते हुए शादी की मांग की। जब उनकी बात नहीं मानी गई तो उसने नस काट ली। महिला ने बारात की तारीख मांगी और डेट न मिलने पर यह कदम उठाया। उन्होंने कहा, हम डर गए, बड़ी मुश्किल से मामला छूटा।

अवधपुरी में शराब दुकान खुलने का विरोध

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शराब दुकानों की शिफ्टिंग का मामला तूल पकड़ रहा है। अब अवधपुरी में ऋषिपुरम तिराहे पर शराब दुकान खुलने का विरोध शुरू हो गया है। रविवार रात में लोगों ने रैली-धरना देकर प्रदर्शन किया, जबकि सोमवार को सद्बुद्धि के लिए रामायण का पाठ भी किया जाएगा। प्रदर्शन में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। रहवासियों का कहना है, जिस जगह दुकान खुल रही है, उससे 50 मीटर के दायरे में ही मंदिर, स्कूल, अस्पताल और बस स्टॉप भी है। बावजूद यहां शराब दुकान खोली जा रही है। इसे लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। रात में धरना प्रदर्शन करने के बाद सोमवार को मंत्री कृष्णा गौर से भी मिलने पहुंचे। प्रदर्शन कर रहे रमण तिवारी ने बताया, अब रामायण का पाठ

करेंगे। ताकि, दुकान खोलने वालों को सद्बुद्धि मिले और वह दुकान को अन्य कहीं शिफ्ट कर लें। सुबह कई लोग प्रदर्शन में शामिल होने के लिए ऋषिपुरम तिराहे पर पहुंचे।

इधर, महापौर से मिलने पहुंचीं महिलाएं- वार्ड नंबर-34 स्थित मालवीय नगर में नई शराब दुकान खुल रही है। इसके पास ही विधायक रेस्ट हाउस, बिड़ला मंदिर भी है। वहीं, घना रहवासी इलाका भी है। इसके चलते लोग विरोध कर रहे हैं। पार्षद पप्पू विलास घाड़गे को ज्ञापन सौंपने के बाद शनिवार को कई महिलाएं सड़क पर उतर आई थी। काले झंडे लेकर उन्होंने दुकान के सामने प्रदर्शन भी किया था। वहीं, सोमवार को वे महापौर मालती राय से भी मिलने पहुंचीं और दुकान न खोले जाने की मांग की।

बावड़ियाकलां में अस्पताल से सिर्फ 50 मीटर दूर खुल रही

बावड़ियाकलां चौक में शराब दुकान खोलने के विरोध में गुरुवार को ही लोग सड़क पर उतर आए थे। उनका कहना था कि जिस जगह दुकान खोली जा रही है, उससे सिर्फ 50 मीटर दूर ही अस्पताल और रहवासी इलाका है। वहीं, मंदिर होने से लोगों की धार्मिक भावनाएं आहत हो रही है।यहां पर दुकान के लिए स्ट्रक्चर तैयार हो रहा था। जैसे ही लोगों को यहां दुकान खुलने की खबर मिली, वे एकजुट होकर विरोध करने लगे।

॥ मंदिरम् ॥

71

त्रिपुरमालिनी शक्तिपीठ, जालंधर

त्रिपुरमालिनी शक्तिपीठ जिसे देवी तालाब मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, पंजाब के जालंधर में स्थित है। यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है। पवित्र तालाब के मध्य स्थित होने के कारण इसे स्थानीय तौर पर देवी तालाब मंदिर के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह 200 वर्ष से अधिक पुराना है। यहां त्रिपुरमालिनी में माता सती का स्तन गिरा था। फलस्वरूप इसे स्तांपीठ के नाम से भी जाना जाता है। यह पीठ भारत में पंजाब राज्य के जालंधर (जालंधर रेलवे स्टेशन से 1 किमी) में स्थित है।

सीएम ने 'सदाकाल गुजरात-भोपाल' कार्यक्रम में पधारे गुजरात के मुख्यमंत्री पटेल का किया स्वागत

नर्मदा मैया ने किया है दोनों राज्यों को समृद्धः सीएम

दोनों राज्यों के बीच परस्पर सहयोग की सुदृढ़ परम्परा है : पटेल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार की शाम स्टेट हैंगर भोपाल पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और गुजरात के गृहमंत्री श्री हर्ष संघवी के आगमन पर उनका पुष्प-गुच्छ और अंगवस्त्र से स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल और गृह मंत्री श्री संघवी को राजा भोज की प्रतिमा भेंट की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नर्मदा मैया ने मध्यप्रदेश और गुजरात को समद्ध बनाने का कार्य किया है। मध्यप्रदेश में अनेक नगरों में बड़ी संख्या में गुजराती बंधु निवास करते हैं। गुजरात के साथ ही मध्यप्रदेश से भी अन्य देशों तक जाकर गुजराती समाज के उद्यमियों और प्रोफेशनल्स ने परिश्रम से स्थान बनाया है। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव के स्वागत से भाव-विभोर होकर कहा कि उन्हें यहां आकर आत्मीयता का अहसास हुआ है। गुजरात और मध्यप्रदेश के बीच परस्पर सहयोग की सुदृढ़ परम्परा है। 'सदाकाल गुजरात-भोपाल' के माध्यम से इन संबंधों में नया आयाम जुड़ रहा है।

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल 'सदाकाल गुजरात-भोपाल' कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए भोपाल पधारे हैं। गुजरात और मध्यप्रदेश के संबंधों में एक नया आयाम सदाकाल गुजरात कार्यक्रम के माध्यम से जुड़ रहा है। गुजरात से बाहर बसने वाले गुजरातियों के योगदान को सम्मानित करने के लिए सदाकाल गुजरात-भोपाल का कार्यक्रम किया गया। इसमें सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही गुजराती व्यंजनों का उत्सव भी आयोजित किया गया है। इस अवसर पर गुजरात के अनेक मंदिरों के वर्चुअल दर्शन की व्यवस्था भी रविंद्र भवन भोपाल में की गई। गुजरात सरकार ने गुजरात स्टेट नॉन रेजिडेंट गुजराती फाउंडेशन के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया है।

स्टेट हैंगर परिसर में किया पौधरोपण, गुजराती समाज ने की भेंट

मुख्यमंत्री डॉ. यादव और गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल ने स्टेट हैंगर परिसर में संयुक्त रूप से आम का पौधा लगाया। इस अवसर पर गुजराती समाज भोपाल के श्री संजय पटेल, श्री हर्षद, श्रीमती प्रिया पाटीदार, श्री चेतन पटेल, रेनका मेहता और अन्य पदाधिकारियों ने गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल से सौजन्य भेंट की। गुजरात के मुख्यमंत्री से श्री राहुल कोठारी एवं अन्य जन-प्रतिनिधियों ने भी भेंट कर उनका स्वागत किया।

समाधान का टेबल हलाकान !

लंबे समय बाद मुख्यमंत्री समाधान ऑनलाइन का टेबल हलकान नजर आया। मुख्यमंत्री डा मोहन यादव ने बीते दिनों समाधान ऑनलाइन में जो तेवर और रुख दिखाया उससे समाधान ऑन लाइन में भोपाल से लेकर जिलों तक में मौजूद हर अधिकारी हलकान था। समाधान ऑनलाइन के लिए जिलों

मोहन का मंत्रालय

आशीष चौधरी

में बैठे अफसरो में भय था कि कहीं मुख्यमंत्री किसी बात को लेकर उन पर गाज न गिरा दें। मुख्यमंत्री ने समाधान ऑनलाइन में करीब डेढ़ दर्जन से अधिक अधिकारियों को सस्पेंड, कारण बताओ नोटिस और यहां तक बर्खास्त तक किया। अधिकारियों ने दबी जुबान में कहा कि मुख्यमंत्री के तेवर और मिजाज से तो यही लग रहा है कि आने वाले महीने में होने वाले समाधान ऑनलाइन और सख्त होंगे।

मंत्री की मंशा पर फेरा पानी, 7 को नोटिस

लाख कोशिशों के बावजूद भी मोहन सरकार के लोक निर्माण मंत्री विभागीय इंजीनियरों की कार्यप्रणाली में सुधार नहीं कर पा रहे हैं। इंजीनियर सुधारने को तैयार नहीं है भले ही लाखों रुपए का सरकारी अपव्यय हो जाए। ताजा मामला कार्यपालन यांत्रियों के प्रशिक्षण का था। विभागीय मंत्री की मंत्री की मंशा अनुसार विभाग ने मैदानी अधिकारियों की कार्य प्रणाली में सुधार और निर्माण कार्य में गुणवत्ता के लिए दिल्ली की एक संस्था सीआरआरआई में प्रशिक्षण के लिए व्यवस्था की। नामित कार्यपालन अधिकारियों को प्रशिक्षण में अनिवार्य रूप से उपस्थित होने का निर्देश दिये, लेकिन विभाग के सात कार्यपालन यंत्री इस ट्रेनिंग में उपस्थित नहीं हुए। ट्रेनिंग देने वाली संस्था ने विभाग को अनुपस्थित अधिकारियों के नाम बता दिये। विभाग ने प्रत्येक अधिकारी पर 42720/- रुपए का भुगतान ट्रेनिंग के लिए संस्थान को किया था जो अपव्वय हो गया। जब यह बात विभागीय मंत्री को पता चली तो उन्होंने कार्रवाई के निर्देश दिए। विभाग ने गैर हाजिर कार्यपालन यांत्रियों को नोटिस देकर 7 दिन में जवाब मांगा है। नोटिस में वरिष्ठ कार्यालय की अवहेलना और शासकीय राशि के अपव्यय को लेकर जवाब तलब किया गया है। विभाग ने कार्यपालन यंत्री वी के त्रिपाठी, प्रदीप कुमार जैन,एनएस भलावी, अंकुर श्रीवास्तव, अलसिंह भिड़े,बीएल भलावी और पीके दोराया को नोटिस जारी किया है।

प्रचार प्रसार में क्यों पीछे रहे जनप्रतिनिधि ?

अपने दिग्गज नेता के जन्मदिन पर बढ़-चढ़कर होर्डिंग व विज्ञापन आदि से प्रचार प्रसार करना राजधानी के जनप्रतिनिधियों का शगल है लेकिन राजधानी के प्रमुख जनप्रतिनिधि, एक दिग्गज नेता के जन्मदिन के प्रचार-प्रसार में कहीं दिखाई नहीं दिए और ना ही उन्होंने शहर में प्रचार प्रसार के लिए होर्डिंग आदि के ही विज्ञापन लगवाये। भोपाल के जन्म प्रतिनिधियों के इस रुख पर सत्ता के शीर्ष में भी आश्चर्य है। यह चर्चा है कि भोपाल में दिग्गज नेता के जन्मदिन पर स्थानीय जनप्रतिनिधि जब होर्डिंग आदि प्रचार प्रसार के लगाते हैं तो हाल ही में एक दिग्गज नेता के जन्मदिन में यह सब नजारा क्यों नहीं दिखाई दिया। राजनीतिक पंडितों का कहना है कि कहीं इसके दूरगामी परिणाम तो सामने नहीं आएंगे ?

एसडीएम मांगे मोर

राजधानी की एक तहसील में पदस्थ अनुविभागीय अधिकारी (एसडीएम) इन दोनों मांगे मोर को लेकर जमकर चर्चा का विषय बने हुए हैं। मातहत अधिकारी और छोटे कर्मचारी तक एसडीएम मांगे मोर से परेशान है और वह इसकी शिकायत ऊपर तक कर चुके हैं। लेकिन ताकतवर एसडीएम का कोई बिगाड़ तक नहीं कर पा रहा है। सूत्र बताते हैं कि एसडीएम कामकाज की फाइलों में तो अपना हिस्सा लेते हैं इसके अतिरिक्त एसडीएम का कहना है कि मातहत अपनी पोजीशन के अनुसार हजारों रुपये और चाहिए दे। ऐसे में तहसील के छोटे कर्मचारी एसडीएम साहब की मांग कहां तक पूरी कर पाएंगे उन्हें यह सब सूझ नहीं पड़ रहा। एक मातहत ने कहा कि फाइल और हर महीने हजारों की अतिरिक्त भेंट अब उनके बस की बात नहीं है वह तो तहसील से निकलना चाहते हैं।

भय की निकली हवा !

मध्य प्रदेश विधानसभा का बजट सत्र का समापन हो गया है। बजट सत्र अधिकारियों के लिए कई अनुभव छोड़ गया है। बजट सत्र को लेकर जिस तरीके से वित्त विभाग में भय बना हुआ था उसे एक जूनियर आईएएस अफसर ने अपनी कुशलता से खत्म कर दिया। सूत्र बताते हैं कि बजट पेश किए जाने से एक दिन पहले वित्त विभाग के अफसरो की मीटिंग में बजट को लेकर जिस तरीके से भय बनाया गया उससे जूनियर आईएएस अफसर थोड़े नर्वस जरूर थे लेकिन आत्मविश्वास भारी था। विधानसभा में बजट की मीडिया ब्रीफिंग तक को लेकर तरह-तरह की चर्चा व भय बनाया, लेकिन जूनियर आईएएस अफसर ने बजट पर अफसरो के भय की परवाह किए बिना बेहतर तरीके से बजट न केवल मीडिया को समझाया बल्कि उनके इस प्रेजेंटेशन पर अन्य सीनियर अफसर भी दंग रह गये। जूनियर आईएएस अफसर की कुशलता का आज भी वित्त विभाग में सीनियर अफसर लोहा मानते हैं।

चलो पढ़ें - आगे बढ़ें

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

'स्कूल चलें हम' अभियान

राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम-2025

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

01 अप्रैल, 2025 | प्रातः 9:30 बजे

शासकीय नवीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अरेरा कॉलोनी (ओल्ड कैंपियन), भोपाल

सबकी पहुंच में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य

- नवीन तकनीक आधारित एजुकेशन पोर्टल 3.0 का लोकार्पण, इस पोर्टल के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया का सरलीकरण, अब तक 6 लाख 10 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया
- छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क पाठ्य-पुस्तकों का वितरण
- नवीन शिक्षा सत्र में 1 अप्रैल से पूर्व 10वीं एवं 12वीं कक्षाओं को छोड़कर समस्त कक्षाओं के परीक्षा परिणाम घोषित
- कक्षा-1 से 8वीं तक सभी शालाओं में बालसभा का आयोजन
- शालाओं में 'भविष्य से भेंट' कार्यक्रम का संचालन
- विशिष्ट उपलब्धियां हासिल करने वाले खिलाड़ी, साहित्यकार, कलाकार एवं शासकीय अधिकारी बच्चों को सुनायेंगे पढ़ाई के महत्व की एवं प्रेरणादायी कहानियां
- शाला स्तर पर पालकों के साथ सांस्कृतिक एवं खेल-कूद की गतिविधियों का आयोजन
- पालकों को शैक्षणिक स्टाफ द्वारा दी जाएगी स्कूल शिक्षा से जुड़ी सरकारी योजनाओं की जानकारी
- पिछले शैक्षणिक सत्र में जिन विद्यार्थियों की 85% से अधिक उपस्थिति रही है, उनके पालकों का होगा सम्मान

D-11219/24

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP